संदेश

यह अत्यंत गर्व की बात है कि नोएडा एसईजेड कार्यालय ने इस पत्रिका का छठा संस्करण निकाला है। यह हमारे सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। मैं इस प्रकाशन के लिए अपना योगदान देने के लिए इस कार्यालय के सभी कर्मचारियों को बधाई देना चाहता हूँ। हमने सभी अनुमोदन समिति और प्राधिकरण की बैठकों के कार्यवृत्त का लगभग अनुकरणीय अनुवाद किया है। हमने अनुवाद के लिए ई–ऑफिस में नए मॉड्यूल के बारे में जानकारी प्रसारित की, जिसके कारण हिंदी में नोटिंग की मात्रा में भी वृद्धि हुई है। हमारी वेबसाइट पर होस्ट की गई शब्दावली को भी नियमित आधार पर अपडेट किया जा रहा है। हमारे सोशल मीडिया साइट्स पर राजभाषा में हमारे पोस्ट में भी वृद्धि देखी गई है। मुझे विश्वास है कि हमारी टीम आने वाले समय में भी इस अच्छे काम को जारी रखेगी।

प्रदर्शन के मोर्चे पर, यह जानकर खुशी होती है कि पिछले वित्तीय वर्ष (2023–24) के दौरान, वार्षिक वृद्धि दर 17.4% थी, जिसमें व्यापारिक वस्तुओं की वृद्धि दर 31.9% और सेवाओं की वृद्धि दर 14.9% थी। वैश्विक भू–राजनीतिक घटनाक्रमों और आर्थिक प्रतिकूलताओं के बावजूद यह सराहनीय है। इसका श्रेय हमारे निर्यातकों को जाता है जिन्होंने इन परिस्थितियों का सामना किया और हमारे अधिकारियों को जिन्होंने व्यापार को सुगम बनाया। संयुक्त अरब अमीरात के बाद अमेरिका हमारा शीर्ष निर्यात गंतव्य है जबकि आईटी/आईटीईएस और रत्न एवं आभूषण क्षेत्र निर्यात में सबसे बड़ा हिस्सा देते हैं। डीटीए खरीद, डीम्ड निर्यात और एसईजेड से एसईजेड आपूर्ति जैसे अन्य लेन–देन की मात्रा में सराहनीय वृद्धि हुई है।

ए. बिपिन मेनन

अ. बिपिन मेनन

विकास आयुक्त

नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

विषय

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

जनवरी से मार्च 2024, की अवधि के लिए आंचलिक एनएसईजेड की प्रतिवेदन....1–24
जनवरी से मार्च 2024, के दस्तावेजों के अनुवाद का विवरण....25
कर्मों के लेख/कर्मो का फल....26–27
जिंदगी का फलसफा....28
'मदर्स डे'....29
कोशिश....30
पीछे क्या रह गया....31–32
अनोखा घर....33
बेटी की बिदाई....34
होली आई रे....35
प्यारी बिटिया....36
हमारी जयपुर यात्रा....37–38
वृक्ष ही जीवन है....39
एक 'उड़ान' जीवन की....40
मोबाइल फोन....41–42
दयालु चरवाहा....43
कविता....44
जिंदगी एक सफर....45
सचल दूरभाष यंत्रः–एक प्रेम कथा....46
आज का जीवन....47
वृद्धाश्रम जीवन स्वार्थीपूर्ण....48
बच्चों की चित्रकला – यशिका....49
बच्चों की चित्रकला – आलिया....50
बच्चों की चित्रकला – अलिजा....51
अधिकारियों की सूची....52–53
सम्पादन....54

विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) का13वां मंत्रिस्तरीय सम्मेलन

विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) एक बहुपक्षीय संगठन है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य के लिए वैश्विक नियम निर्धारित करता है। संगठन के 166 सदस्य हैं जिसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) का 13वां मंत्रिस्तरीय सम्मेलन 26 फरवरी से 1 मार्च, 2024 तक संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के अबू धाबी में आयोजित किया गया था। मंत्रिस्तरीय सम्मेलन हर दो साल में एक बार आयोजित किया जाता है और यह संगठन में निर्णय लेने वाली सर्वोच्च संस्था है।

वैश्विक व्यापार में इसके आर्थिक महत्व को देखते हुए भारत इस संगठन का एक प्रमुख सदस्य रहा है। यह विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में आवश्यक विकास परिप्रेक्ष्य को सामने रखता रहा है जिसे दोहा विकास कार्यसूची का आधार माना जाता था। इसने विकासशील देशों के हितों की रक्षा के लिए पद संभालने की अपनी जिम्मेदारी से परहेज नहीं किया है। इसके लिए राजनेता कौशल और विकसित देशों द्वारा डाले गए भारी दबाव को झेलने की क्षमता की आवश्यकता है।

13वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में कई मुद्दे चर्चा के लिए आये और भारत विकासशील देशों की स्थिति को स्पष्ट करने में कामयाब रहा। प्रमुख मुद्दे कृषि, मत्स्य पालन, इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य, बौद्धिक संपदा, अल्प विकसित देश (एलडीसी), निवेश सुविधा आदि पर थे। हालाँकि, केवल ई–कॉमर्स अधिस्थगन और ट्रिप्स छूट पर एक समझौता था। कैमरून में अगले मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के मद्देनजर अन्य मुद्दों पर जिनेवा में वार्ता समितियों में काम किया जाएगा।

माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल के नेतृत्व में भारत ने विकासशील देशों के हितों की रक्षा करने के साथ–साथ 13वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में परिणाम सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत की वार्ता दल में वाणिज्य सचिव, अतिरिक्त सचिव, संयुक्त सचिव, विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के राजदूत और वाणिज्य विभाग (टीएनएम डिवीजन) के साथ–साथ भारत के स्थायी मिशन के अधिकारी शामिल थे। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) अध्ययन केंद्र, जो कि प्रबुद्ध मंडल है, ने इस वार्ता टीम का समर्थन किया।

वार्ता के दौरान जिन प्रमुख क्षेत्रों पर चर्चा हुई उनमें से कुछ निम्नलिखित थे:

कृषि

जहां तक विकास के आयाम का सवाल है यह महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। भारत और उसका गठबंधन जिसे जी–33 कहा जाता है, खाद्य सुरक्षा उद्देश्यों के लिए सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग पर एक परिणाम पर बातचीत कर रहे थे। हालाँकि, विडंबना यह है कि उन देशों ने इसका काफी विरोध किया जो सबसे अधिक सब्सिडी प्रदान करते हैं। मुख्य मुद्दा भारत के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) जैसे प्रशासित मूल्य तंत्र के मामले में सब्सिडी की गणना में इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति थी। कृषि पर समझौते के हिस्से के रूप में प्रशासित मूल्य को ऐतिहासिक मूल्य (1986–88 का औसत) के विरुद्ध बेंचमार्क किया गया है।हालाँकि, खाद्य मुद्रास्फीति के कारण, कृत्रिम रूप से गणना किया गया यह सब्सिडी स्तर उच्च हो जाता है और न्यूनतम स्तर का उल्लंघन करता है। यह त्रुटिपूर्ण गणना पद्धति ही है जो भारत जैसे विकासशील देशों की एमएसपी रखने में असमर्थता के मूल में है। हालाँकि, चूंकि बाली में मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के दौरान शांति खंड पर बातचीत हुई थी, इसलिए कोई भी किसी देश को इस पर विवाद में नहीं ले जा सकता। आश्चर्य की बात नहीं कि दुनिया भर के सब्सिडी दाताओं ने इस मुद्दे पर किसी भी स्थायी समाधान पर आपत्ति जताई।

सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग कार्यक्रम

- खाद्य सुरक्षा और घरेलू खाद्य सहायता के लिए सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग तकनीकी रूप से हरे पेटी में है
- हालाँकि, यदि खाद्य प्रशासित कीमतों (भारत में न्यूनतम समर्थन मूल्य) पर खरीदा जाता है, तो सब्सिडी घटक को अधिसूचित किया जाना चाहिए
- हालाँकि, यदि खाद्य प्रशासित कीमतों (भारत में न्यूनतम समर्थन मूल्य) पर खरीदा जाता है, तो सब्सिडी घटक को अधिसूचित किया जाना चाहिए
- बाजार मूल्य समर्थन की गणना एक निश्चित बाहरी संदर्भ मूल्य और लागू प्रशासित मूल्य के बीच के अंतर को लागू प्रशासित मूल्य प्राप्त करने के लिए योग्य उत्पादन की मात्रा से गुणा करके की जाती है।

एमपीएस = (एएपी-ईआरपी)*क्यू

कहाँ,

- 'एमपीएस' बाजार मूल्य समर्थन है
- 'एएपी' अनुप्रयुक्त प्रशासित मूल्य है
- ईआरपी बाहरी संदर्भ मूल्य है (वर्ष 1986-88 के लिए)
- 'क्यू' लागू प्रशासित मूल्य प्राप्त करने के लिए योग्य उत्पादन की मात्रा है

इसके अलावा, यह ध्यान रखना उचित है कि कृषि पर समझौता संभवतः सबसे विषम समझौतों में से एक है क्योंकि अधिकांश विकसित देश अपने मौजूदा सब्सिडी कार्यक्रमों को अलग करने के लिए बातचीत करने में कामयाब रहे। ये हरे बॉक्स और नीले बॉक्स का हिस्सा हैं, बाद वाले वे हैं जहां उत्पादन को सीमित करने के लिए सब्सिडी दी जाती है। हालाँकि, कुछ विकसित देशों ने अपने सब्सिडी कार्यक्रमों में सुधार किया है, वे इन्हें क्रमशः स्वीकार्य हरे और नीले बॉक्स में रखने में सक्षम हैं।

कुल कृषि घरेलू सहायता:"पेटियाँ"

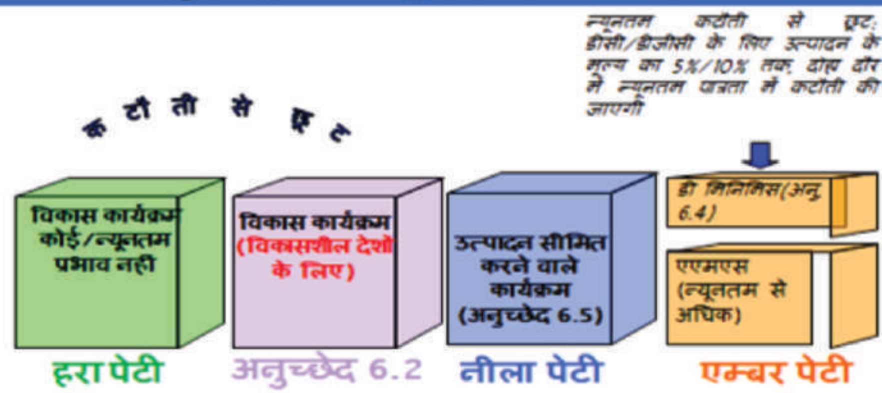

घरेलू सहायता के मुख्य उपयोगकर्ता - डीसी; विकासशील देशों के पास बजट की कमी है

खाद्य सुरक्षा के लिए सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग के मुद्दे के अलावा, घरेलू समर्थन, बाजार पहुंच, निर्यात निषेध/प्रतिबंध/प्रतिस्पर्धा और कपास के क्षेत्रों पर भी चर्चा हुई। घरेलू समर्थन और बाजार पहुंच से संबंधित मुद्दों पर यूरोपीय संघ और अमेरिका जैसे विकसित देशों के बीच भी मतभेद थे। इसलिए, कोई समझौता नहीं हो सका और यह महत्वपूर्ण स्तंभ इस मंत्रिस्तरीय बैठक में अनिर्णायक रहा।

मत्स्य पालन सब्सिडी

जून 2022 में हुए समझौते में समझौते के दो स्तंभों को शामिल किया गया, अर्थात् अवैध, असूचित और अनियमित (IUU) मछली पकड़ना और अत्यधिक मात्रा में मछली पकड़ना। यह समझौता क्षेत्राधिकार के बाहर मछली पकड़ने के लिए सब्सिडी पर भी रोक लगाता है। समझौते में विकासशील देशों के लिए तकनीकी सहायता और क्षमता निर्माण के उपाय हैं। लाभ प्राप्त करने के इच्छुक सदस्यों के लिए अधिसूचना और पारदर्शिता आवश्यकताएँ मौजूद हैं। आपदा राहत के लिए सब्सिडी प्रदान करने के लिए अवसर की एक खिड़की मौजूद है। अंत में, यह कहा गया है कि समझौते के चार वर्षों के भीतर व्यापक विषयों को विकसित करने की आवश्यकता है अन्यथा इसे समाप्त कर दिया जाएगा।

एमसी13 में उद्देश्य अत्यधिक क्षमता और अत्यधिक मछली पकड़ने के तीसरे स्तंभ को देखना था। हालाँकि, मतभेद के प्रमुख क्षेत्र उच्च समुद्र में मछली पकड़ने के लिए प्रदान की जाने वाली सब्सिडी और कारीगर मत्स्य पालन के लिए विशेष और विभेदक उपचार की अपर्याप्तता थे। कई विकसित देश गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए सब्सिडी प्रदान करते हैं और इस पर कोई अनुशासन नहीं चाहते हैं। यहां तक कि चीन जैसे देशों के पास भी गहरे समुद्र में अपने बेड़े हैं, जहां उनके कर्मचारी तैनात रहते हैं। कारीगर मत्स्य पालन पर, ये उन मछुआरों से संबंधित हैं जो आजीविका के साधन हैं और मुश्किल से अपना जीवन यापन कर पाते हैं। इसलिए सब्सिडी को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए उन्हें पर्याप्त समयावधि प्रदान करना महत्वपूर्ण है। बड़े मछली पकड़ने वाले देशों ने इसे स्वीकार नहीं किया। फिर भी, विषय पर चर्चा की गई और आगे की बातचीत के लिए इसे लिया जाएगा।

इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स

इस महत्वपूर्ण क्षेत्र पर 1997 में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) का एक कार्य कार्यक्रम था। ऐसे कई क्षेत्र थे जिन पर चार मंचों पर बातचीत होनी थी। हालाँकि, इसमें बहुत कम प्रगति हुई और यह मंत्रिस्तरीय अगले मंत्रिस्तरीय तक समय सीमा के साथ काम जारी रखना

चाहता है। ई–कॉमर्स अधिस्थगन इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसमिशन पर सीमा शुल्क लगाने के बारे में है। हालाँकि स्थगन की सटीक प्रकृति पर कोई स्पष्टता नहीं है, लेकिन एक सामान्य समझ है कि यह इलेक्ट्रॉनिक प्रसारण जैसे कि इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों या पत्रिकाओं से संबंधित है। कुछ अध्ययनों ने राजस्व हानि की मात्रा का संकेत दिया है, हालांकि यह भी एक तथ्य है कि देश ऐसे ट्रांसमिशन पर कोई शुल्क नहीं लगाते हैं या लगाने की कोई ठोस योजना नहीं है। मंत्री इस रोक को बढ़ाने पर सहमत हुए।

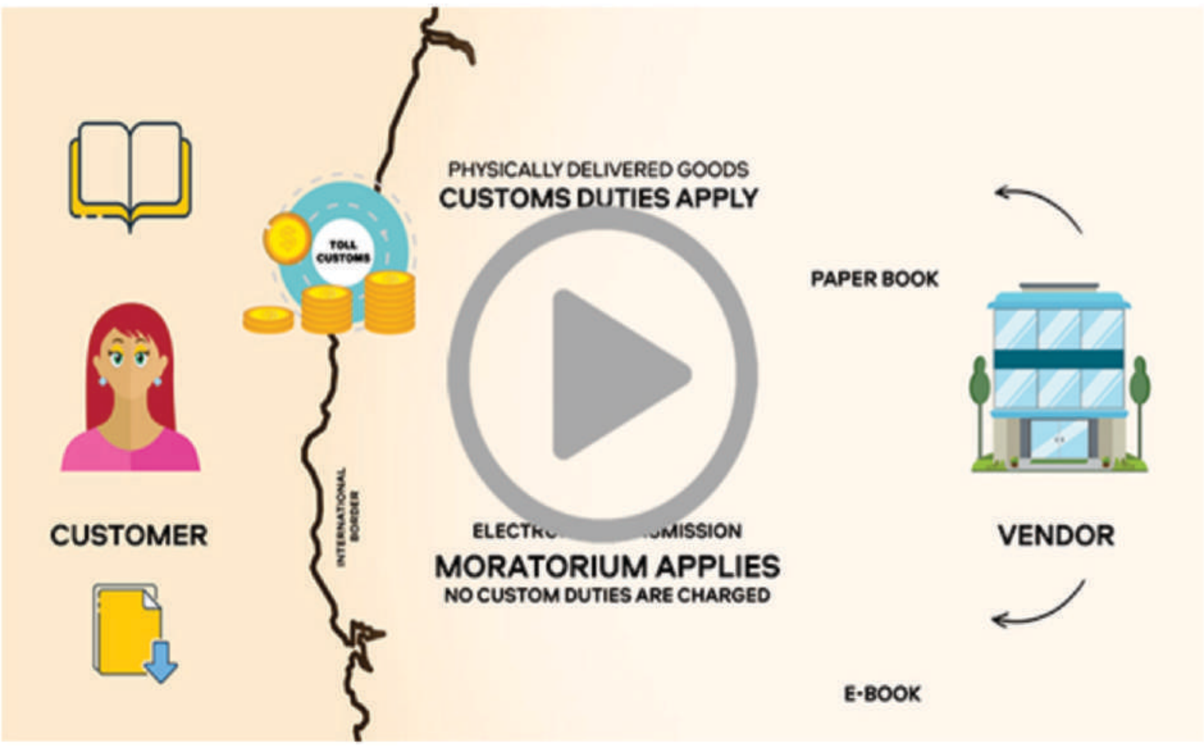

ट्रिप्स

ट्रिप्स विश्व व्यापार संगठन में बौद्धिक संपदा से संबंधित समझौता है। मंत्रिस्तरीय बैठक में उठाए गए मुद्दों में से एक गैर–उल्लंघन और स्थितिजन्य शिकायतों का था। ये ऐसी शिकायतें हैं जो ट्रिप्स के कानूनी प्रावधानों का उल्लंघन नहीं करती हैं लेकिन व्यापार में बाधाएं पैदा करने के अर्थ में समझौते की भावना के खिलाफ हैं। इसे हमेशा ई–कॉमर्स अधिस्थगन से जोड़ा गया है और यहां तक कि इस मंत्रिस्तरीय बैठक में भी यह निर्णय लिया गया कि सदस्य ऐसी शिकायतें शुरू नहीं करेंगे।

बहुपक्षीय समझौते

विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सर्वसम्मति आधारित दृष्टिकोण के कारण धीमी प्रगति के कारण, कुछ देशों ने बहुपक्षीय समझौतों पर विचार करने का निर्णय लिया। इन समझौतों में देशों का एक समूह किसी सामान्य मुद्दे पर एक साथ आता है और सदस्यता बढ़ाने का प्रयास करता है। इन्हें संयुक्त वक्तव्य पहल या जेएसआई के रूप में संदर्भित किया गया था और इसमें घरेलू विनियमन, एमएसएमई, लिंग, स्थिरता, निवेश सुविधा आदि जैसे कई क्षेत्रों को शामिल किया गया था।

13वीं मंत्रिशास्त्रीय बैठक के दौरान बहुप्रतीक्षित बैठकों में एक निवेश सुविधा थी। भारत ने पुरातनपंथी के रूप में इसका विरोध किया क्योंकि इस समूह को ऐसे सामान्य उत्साह को उठाने की हिस्सेदारी के आधार पर संगठन के बहुपक्षीय निर्णय को प्रभावित करना पड़ा, जिससे बड़े पैमाने पर समर्थन प्राप्त होगा। निवेश इकाई को लगभग 123 सदस्यों का समर्थन प्राप्त था और चिली तथा कोरिया इस प्रक्रिया का नेतृत्व कर रहे थे।

मंत्रिस्तरीय बैठक में उल्लेखित कुछ अन्य बहुपक्षीय समझौते प्लास्टिक प्रदूषण और पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ प्लास्टिक व्यापार (डीपीपी) से संबंधित थे, जिन्हें 78 सदस्यों व्यापार और पर्यावरणीय स्थिरता संरचित चर्चाएँ (TESSD) का समर्थन प्राप्त था; जिसे कनाडा और कोस्टा रिका के समन्वयक 48 सदस्यों के साथ जीवाश्म ईंधन सब्सिडी सुधार (एफएफएसआर); और 72 सदस्यों के साथ सेवा घरेलू विनियमन में अच्छे नियामक अभ्यास का कार्यान्वयन के साथ 76 सदस्यों का समर्थन प्राप्त था।

निष्कर्षतः, विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) वार्ता निश्चित रूप से धीमी हो गई है। हालाँकि, यह संभावना है कि बातचीत इसी गति से जारी रहेगी और प्रत्येक मंत्रिस्तरीय वार्ता के नतीजे केवल कमजोर ही होंगे। कुछ देश स्थिरता, पर्यावरण, श्रम, जलवायु परिवर्तन, लिंग आदि जैसे गैर–व्यापार मुद्दों को कार्यसूची का हिस्सा बनाने पर जोर देते रहेंगे। इन्हें विकासशील देशों से निर्यात के विरुद्ध बाधाएँ खड़ी करने के उपकरण के रूप में बहुत अच्छी तरह से उपयोग किया जा सकता है। धीमी प्रगति के बावजूद भारत बहुपक्षीय प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्ध रहा है। यह हमेशा संतुलित, समतापूर्ण और विकासोन्मुख परिणाम के लिए खड़ा रहा है।

*****

सेमीकंडक्टर चिप मूल्य श्रृंखला

सेमी–कंडक्टर चिप आज दुनिया के लगभग कई उपकरणों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रौद्योगिकी में बदलाव के साथ, इसे मोबाइल फोन, कंप्यूटर, वॉशिंग मशीन, टेलीविजन, रेफ्रिजरेटर, खिलौने और ऑटोमोबाइल जैसे कई उपभोक्ता उत्पादों में जगह मिल गई है। चिप्स का उपयोग डेटा सेंटर हार्डवेयर, टेलीकॉम बेस स्टेशन, पावर इंस्टॉलेशन, मानव रहित हवाई वाहन या ड्रोन, सौर पैनल, एलईडी ड्राइवर आदि जैसे औद्योगिक उत्पादों में भी किया जाता है। रक्षा और अंतरिक्ष सहित सभी उपयोगिता क्षेत्र मार्गदर्शन, संवेदन, और संचार के लिए अपने सिस्टम में चिप्स का उपयोग करते हैं। तकनीकी प्रगति से प्रेरित लघुकरण के साथ, ये चिप्स हमारे दैनिक जीवन का अधिक अपरिहार्य हिस्सा बन जाएंगे। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि भारत इन चिप्स की समग्र मूल्य श्रृंखला का हिस्सा बनने पर जोर दे क्योंकि यह वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में अपना उचित स्थान सुनिश्चित करेगा।

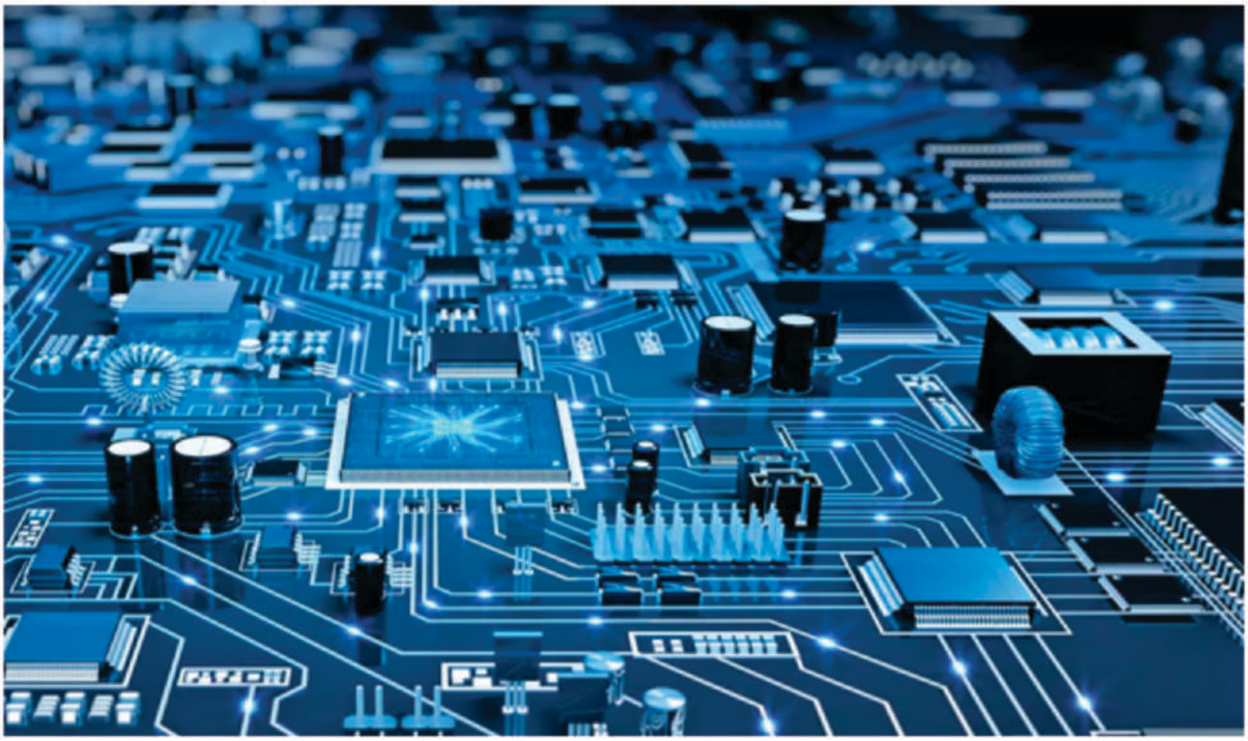

चिप्स की मूल्य श्रृंखला चिप के डिजाइन से शुरू होती है जो चिप के मूल्य का लगभग 15–20% होती है। हालाँकि, परिष्कार के आधार पर, उच्च स्तर वाले लोगों के लिए यह 50% तक भी जा सकता है। यह ताइवान, दक्षिण कोरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे कुछ

देशों के हाथ में है। इन चिप्स को डिजाइन करने वाली कई कंपनियों ने इस काम का कुछ हिस्सा भारतीय कंपनियों को आउटसोर्स कर दिया है या उनके पास कई कर्मचारी हैं जो भारतीय मूल के हैं। इसलिए, भारत भी कुछ बड़े खिलाड़ियों के साथ चिप्स की इस डिजाइनिंग में शामिल होने की संभावना तलाश सकता है। डीआरडीओ की कुछ प्रयोगशालाओं ने इन पर शोध किया है और ऐसे डिजाइनों के लिए संभावित सहयोगी केंद्र हो सकते हैं।

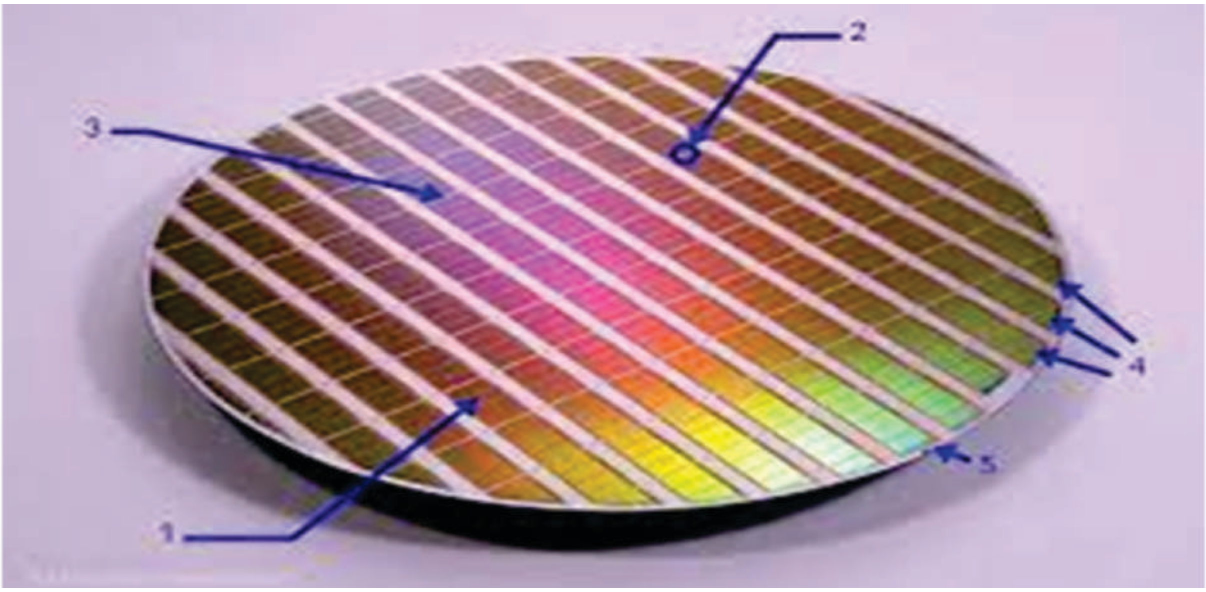

इस डिजाइन के आधार पर चिप का निर्माण या निर्माण करना होता है। इसके लिए तकनीकी रूप से उन्नत चिप्स के विकास के लिए भारी निवेश और समय अवधि की आवश्यकता होती है। इसका मूल्य लगभग 20–40% है और यह कुछ कंपनियों का संरक्षण है। एक बार फिर, लागत प्रौद्योगिकी और चिप्स के अनुप्रयोग पर निर्भर करती है। इनमें से कुछ हैं ताइवान सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड (टीएसएमसी), टेक्सस उपकरण, माइक्रोन तकनीकी, सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स, ब्रॉडकॉम आईएनसी, एएमडी आईएनसी, एस.के. हाइनिक्स और मीडिया टेक आईएनसी। चिप निर्माण में मुख्य पहलू विभिन्न इनपुट के बीच की दूरी को कम करके सर्किट को संघनित करने की क्षमता है। इन दूरियों को नैनोमीटर या एनएम के संदर्भ में मापा जाता है। नैनोमीटर जितना कम होगा, लागत और तकनीकी विकास का स्तर उतना ही अधिक होगा। तकनीक का दूसरा पहलू इन चिप्स की स्टैकिंग है। स्टैक की संख्या जितनी अधिक होगी, मेमोरी बेस उतना ही बड़ा होगा। इसलिए जहां तक चिप्स का सवाल है यह उन्नति का एक और क्षेत्र है।

उदाहरण के लिए, आज निर्मित होने वाले सबसे परिष्कृत चिप्स 3 एनएम पर हैं जो मोबाइल फोन, डेटा सेंटर, कंप्यूटर सीपीयू, टेलीकॉम बेस स्टेशन और रक्षा और अंतरिक्ष अनुप्रयोगों में अपना रास्ता तलाशते हैं। ताइवान स्थित कंपनी टीएसएमसी इस बाजार में सबसे बड़ी खिलाड़ी है। 1 एनएम चिप्स बनाने की दिशा में भी प्रगति हो रही है और ये भी जल्द ही व्यावसायिक बाजार में आ जानी चाहिए। यह उच्च अंत अनुप्रयोगों के लिए परिपथको संपीड़ित करने में सक्षम करेगा।

फिर 10–15 एनएम पर चिप्स हैं जो मोबाइल, दूरसंचार उपकरण और डेटा केंद्रों में भी बहुत सारे अनुप्रयोग पाते हैं। सबसे आम चिप्स 28 एनएम पर हैं और इसका उपयोग बड़े पैमाने पर स्वचालित क्षेत्र में किया जाता है। इस क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक सुविधाओं के बढ़ने से इन चिप्स की यहां काफी मांग है। 55–65 एनएम कोष्ठक में चिप्स का उपयोग कुछ उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों जैसे वॉशिंग मशीन और टीवी के साथ–साथ स्त्रोत पैनलों के लिए भी किया जाता है। बड़े 100 एनएम चिप्स का उपयोग एलईडी ड्राइवर और खिलौनों में किया जाता है।

चिप मूल्य श्रृंखला का अंतिम चरण चिप की असेंबली, परीक्षण, अंकन और पैकेजिंग या एटीएमपी है। यह मूल्य श्रृंखला के शेष भाग के लिए जिम्मेदार है। आउटसोर्सिंग संयोजन और टेस्ट या ओएसएटी की अवधारणा भी है जिसका सहारा कई चिप निर्माता लेते हैं। वे इसे तीसरे पक्ष को आउटसोर्स करते हैं क्योंकि इस प्रक्रिया के लिए एक अलग प्रकार की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। सर्वव्यापी रूप से, इस चरण को इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण प्रणाली या ईएमएस के रूप में जाना जाता है। संयोजन वेफर को एक अधःस्तर पर रखने के बारे में है। इसके बाद, इसे अपेक्षित आकार में काटा जाना चाहिए ताकि यह डिवाइस के लिए आवंटित स्थान में फिट हो सके। फिर इन चिप्स का परीक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि सभी माइक्रो–सर्किट क्रम में हैं। भारत में अधिकांश खिलाड़ी चिप मूल्य श्रृंखला के इस चरण में विशेषज्ञ हैं।

अंत में, यह महत्वपूर्ण है कि भारत धीरे–धीरे सेमी–कंडक्टर चिप्स की मूल्य श्रृंखला के सभी तत्वों में शामिल होने का प्रयास करे। जबकि निर्माण के लिए भारी निवेश की आवश्यकता हो सकती है, कोई 28–100 एनएम ब्रैकेट चिप्स का पता लगा सकता है जो कई अनुप्रयोगों में उपयोग किए जाते हैं। हालाँकि, यह डिजाइन मूल्य श्रृंखला है जहाँ भारत की उपस्थिति सीमित है और हमारे पास एक बड़ी क्षमता है जिसमें कोई भी हमारी घरेलू प्रयोगशालाओं से प्रौद्योगिकियों को लाइसेंस दे सकता है। इस प्रकार हमें वैश्विक खिलाड़ी बनने के लिए सेमी–कंडक्टर विकास पर जोर देने की आवश्यकता है।

1. 2023-24 की अवधि के लिए आंचलिक एनएसईजेड की रिपोर्ट

1. माल निर्यात

2023–24 की अवधि के दौरान आंचलिक नोएडा एसईजेड का कुल माल निर्यात 16209 करोड़ रुपए था। इन निर्यातों का एसईजेड–वार ब्योरा इस प्रकार है ।

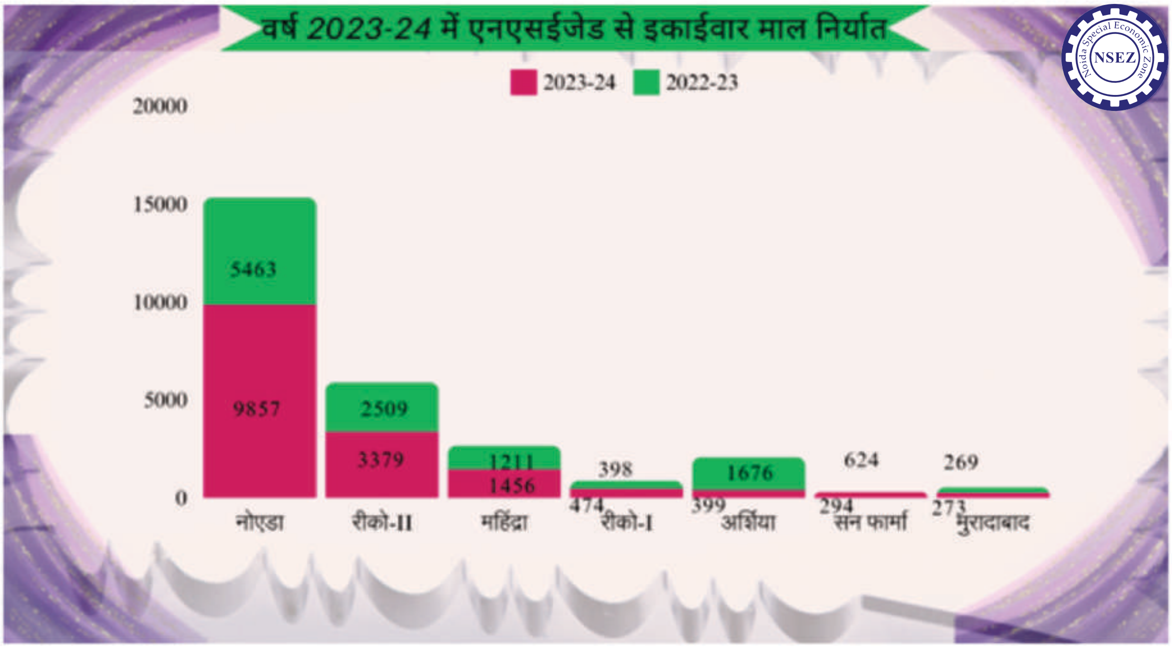

इन व्यापारिक निर्यात के लिए शीर्ष 10 गंतव्यों के प्रथम स्थान पर स्पेन है।

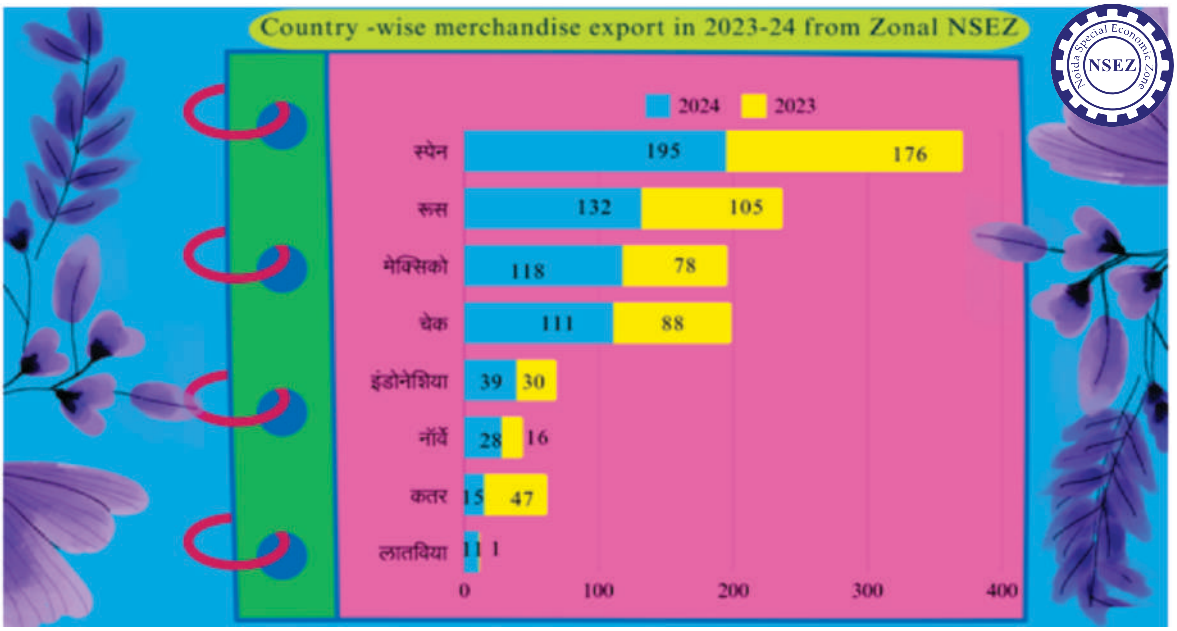

उपरोक्त एसईजेड में इस अवधि के लिए शीर्ष 3 निर्यातक एसईजेड इकाइयां इस प्रकार है।

A. नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. एसी इम्पेक्स

II. पीसी यूनिवर्सल प्राइवेट लिमिटेड

III. आईएसएम इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड

B. जयपुर (सीतापुरा) विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. आइडियल फिस्कल सर्विसेज लिमिटेड

II. वैभव ग्लोबल लिमिटेड

III. लुनावत जेम्स

C. मुरादाबाद विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. सी एल गुप्ता ओवरसीज एलएलपी

II. दीवान इंडिया

III. पार्थ एक्सपोर्ट्स

D. महिंद्रा विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. निटप्रो इंटरनेशनल

II. मैक्सॉप इंजीनियरिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड

III. मरुधर क्वार्ट्ज सर्फेस प्राइवेट लिमिटेड

E. अन्य निजी विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड–I

II. निटप्रो इंटरनेशनल

III.. मैक्सॉप इंजीनियरिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड

2. सेवाएं

2023–24 की अवधि के दौरान आंचलिक नोएडा एसईजेड का कुल सेवा निर्यात 98486.0 करोड़ रुपए था। यह पिछले वर्ष की समान अवधि से 10% की वृद्धि है जिसमे निर्यात 83902.8 करोड़ रुपए था। सेवाओं का विवरण इस प्रकार है ।

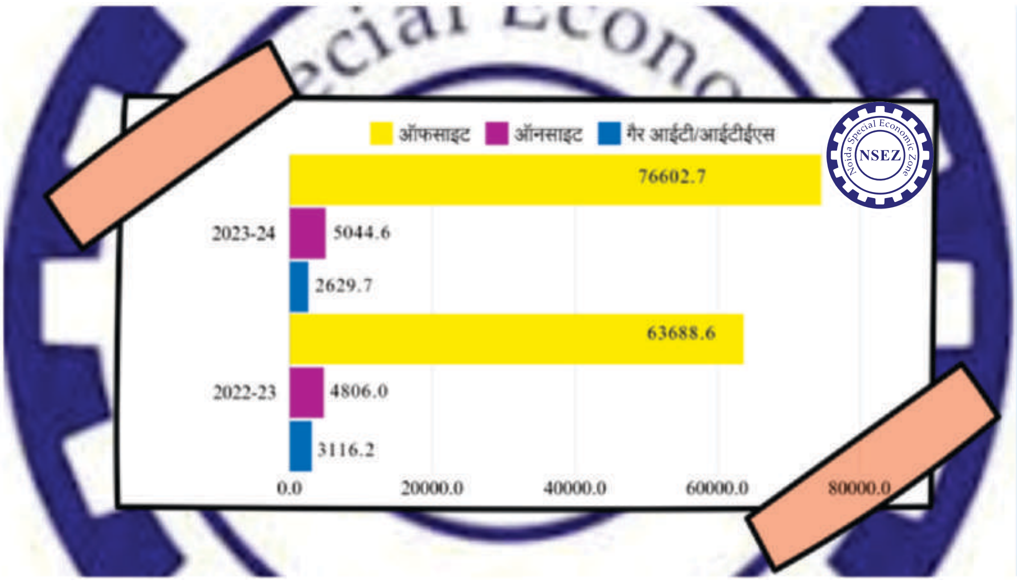

3. डीम्ड या मानित निर्यात

2023–24 की अवधि के लिए आंचलिक नोएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयों द्वारा किया गया कुल निर्यात 371.8 करोड़ रुपए था। एसईजेड के अनुसार डीम्ड निर्यात इस प्रकार है।

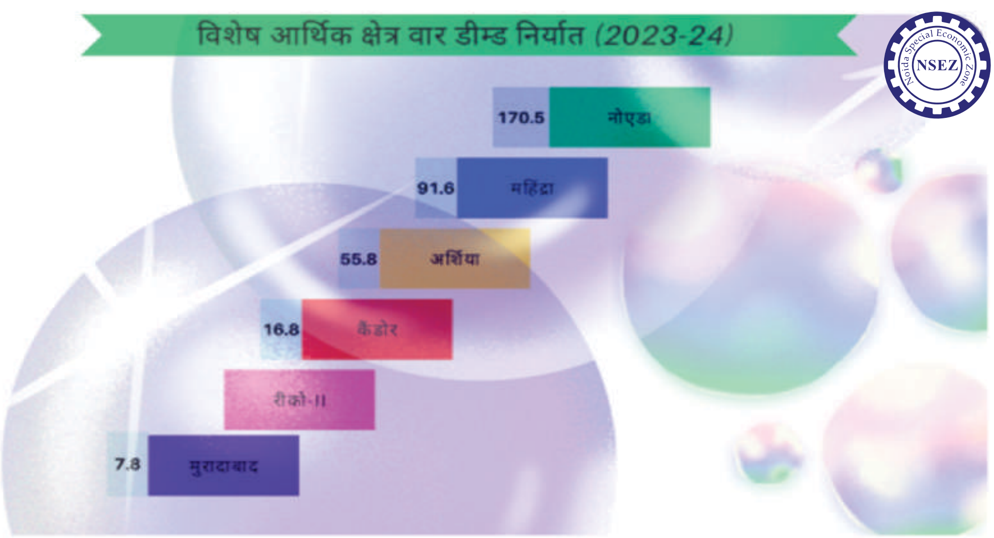

4. घरेलू खरीद

2023–24 की अवधि के लिए आंचलिक नोएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयों द्वारा की गई कुल घरेलू खरीद 2161.2 करोड़ रूपए थी। यह घरेलू इनपुट (विनिर्माण और सेवा इकाईयों के लिए) की स्रोत का एक उपाय है, जिससे ''भारत से मेक इन इंडिया के लिए स्रोत की अवधारणा को बढ़ावा मिलता है। उक्त अवधि के लिए एसईजेड–प्रज्ञ घरेलू खरीद इस प्रकार है ।

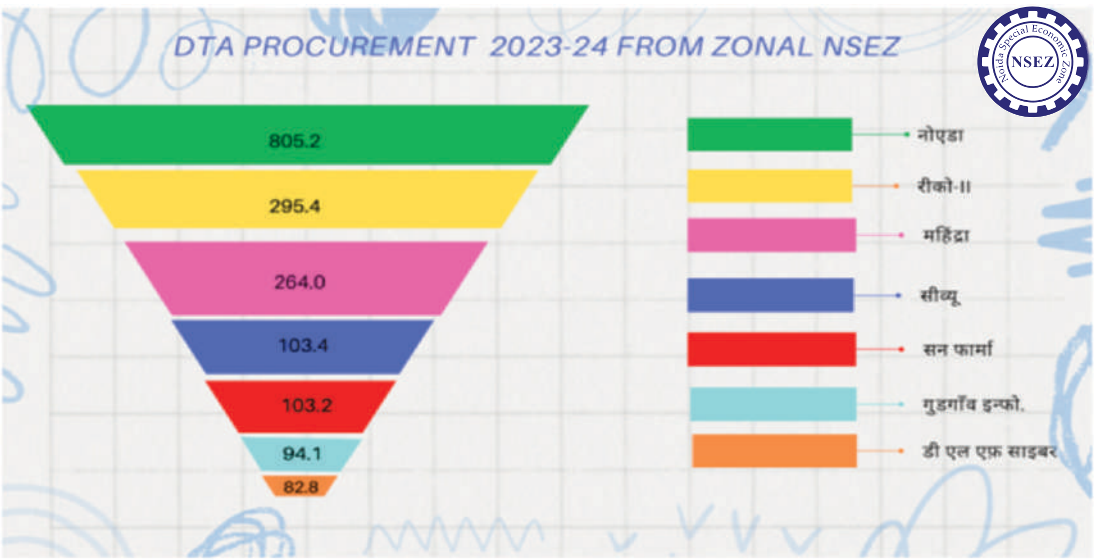

माल की क्षेत्रवार शीर्ष घरेलू खरीद इस प्रकार है।

5.

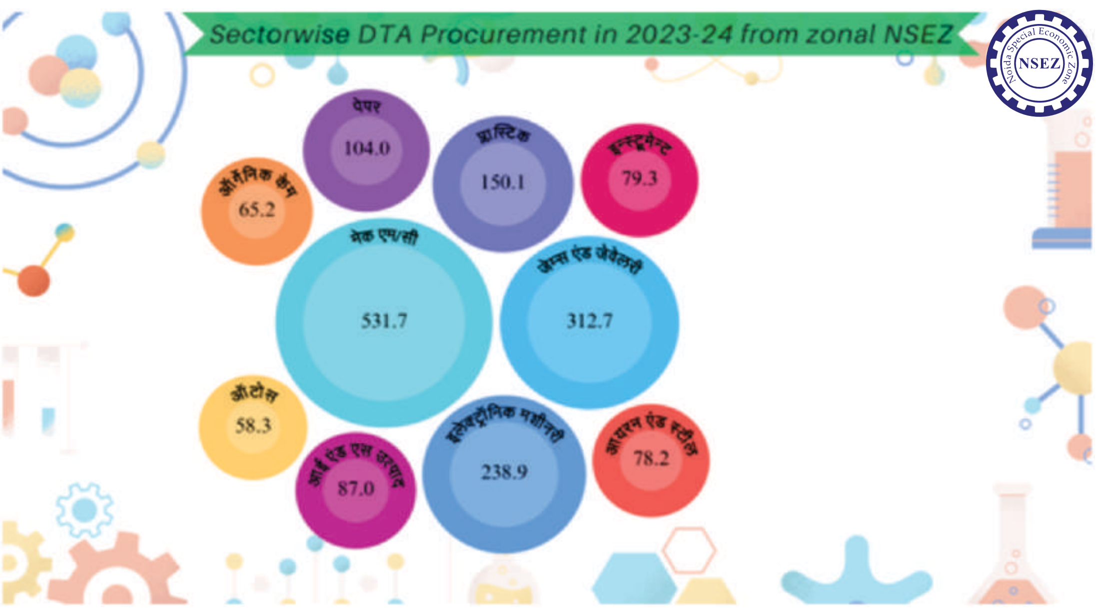

एसईजेड से एसईजेड आपूर्ति

2023–24की अवधि के लिए आंचलिक नोएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयों द्वारा की गई कुल एसईजेड आपूर्ति 539.8करोड़ रुपए थी। (केवल यदि एसईजेड ऑनलाइन प्रणाली में इकाईयों द्वारा दर्ज किया गया हो)। एसईजेड के अनुसार शीर्ष अपूर्तियां इस प्रकार है।

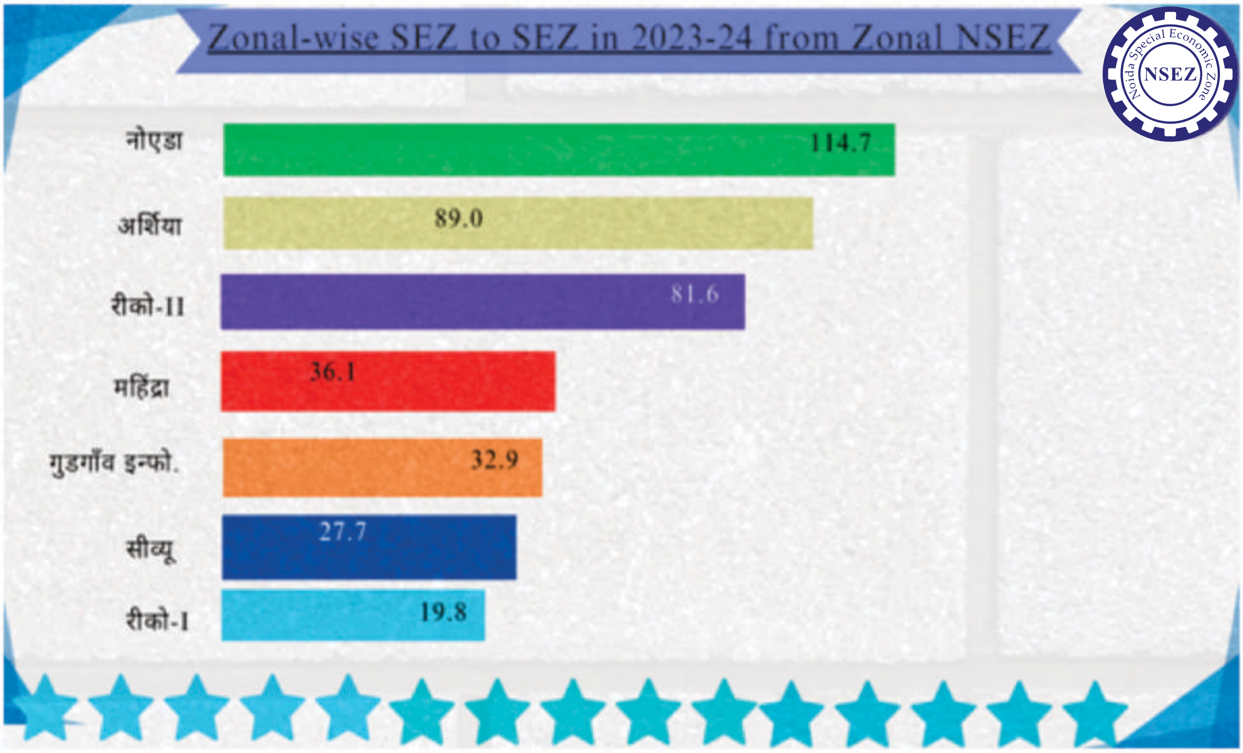

भारत ईएफटीए व्यापार समझौता

भारत और ईएफटीए ने 10 मार्च, 2024 को नई दिल्ली के भारत मंडपम में व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए। ईएफटीए चार देशों आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड का समूह है। वार्ता अक्टूबर, 2008 में शुरू हुई और दिसंबर, 2019 में निष्क्रियता के चरण में चली गई। अगस्त 2023 में 19वें दौर की वार्ता के साथ इसे पुनर्जीवित किया गया और अगले आठ महीनों की अवधि में इसका समापन हुआ। हालाँकि, इसे लागू करने के लिए अब दोनों पक्षों को इसका अनुमोदन करना होगा।

हस्ताक्षर समारोह में, भारत के माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा उठाए गए मुख्य बिंदु फार्मास्यूटिकल्स, अनुसंधान और विकास, प्रसंस्कृत खाद्य, हरित ऊर्जा जैसे कई क्षेत्रों के लिए समझौते द्वारा प्रदान किए गए अपार अवसरों के बारे में थे। मशीनरी आदि, माननीय स्विस मंत्री श्री गाइ पार्मेलिन ने विविधता और मतभेदों का सम्मान करने की

आवश्यकता के बारे में बात की। उन्होंने संकेत दिया कि दोनों अर्थव्यवस्थाएं एक–दूसरे की पूरक हैं और समग्र परिणाम न्यायसंगत हैं। आइसलैंड के माननीय मंत्री श्री बजरनी बेनेडिक्टसन ने कहा कि टीईपीए दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करेगा। लिकटेंस्टीन की माननीय मंत्री सुश्री डोमिनिक हस्लर ने अपने देश में नवीन कंपनियों की उपस्थिति के बारे में बात की जो भारतीय कंपनियों के साथ सहयोग कर सकती हैं। अंत में, नॉर्वे के माननीय मंत्री श्री जान क्रिश्चियन वेस्ट्रे ने संकेत दिया कि यह समझौता निवेश और सेवाओं की पूर्वानुमेयता सुनिश्चित करेगा। यह बताते हुए कि नॉर्वे द्वारा निवेश का मौजूदा स्तर 25 अरब डॉलर है, समझौते के परिणामस्वरूप इसमें वृद्धि होगी। उन्होंने यह भी बताया कि निवेश करने की इच्छुक कंपनियों की सहायता के लिए भारत में एक ईएफटीए कार्यालय खोला जाएगा।

यह समझौता वास्तव में ईएफटीए और भारत के बीच आर्थिक संबंधों के लिए एक मील का पत्थर है। यह पश्चिमी गोलार्ध में विकसित देशों के साथ पहला व्यापार समझौता होगा और अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ जुड़ाव का द्वार खोलेगा। जबकि भारत कृषि उत्पादों और वस्त्रों

के निर्यात के अवसरों का लाभ उठा सकता है, कई कंपनियां यूरोपीय संघ जैसे आसपास के बड़े बाजारों तक पहुंच बनाने के लिए सहयोग कर सकती हैं। ईएफटीए देशों के लिए, भारत में निवेश करने और बाजार पहुंच हासिल करने का अवसर है। कुछ संभावित क्षेत्र जहां दोनों साझेदार लाभान्वित होंगे, वे बुनियादी ढांचा, लॉजिस्टिक्स, खाद्य प्रसंस्करण, फार्मास्यूटिकल्स हैं। रसायन, मशीनरी, बैंकिंग, वित्तीय सेवाएँ, बीमा आदि इसके अलावा, ईएफटीए ने अगले 15 वर्षों में लगभग 100 बिलियन डॉलर का एफडीआई प्रतिबद्ध किया है। इसके अलावा, ईएफटीए ने अगले 15 वर्षों में लगभग 100 बिलियन डॉलर का एफडीआई लाने का वादा किया है। प्रस्तावित निवेश और बढ़े हुए व्यापार से लगभग 10 लाख अतिरिक्त नौकरियाँ पैदा होंगी। यह प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की सुविधा भी प्रदान करेगा और देश में तकनीकी उन्नयन के लिए सुविधाएं भी तैयार करेगा।

नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र ओरिजिन ट्रैक के नियमों पर इन वार्ताओं में शामिल होने से खुश था। पदों में मूलभूत अंतर को देखते हुए बातचीत कठिन थी। हालाँकि, दोनों पक्ष एक समझौते पर मुहर लगाने के लिए अपनी मौजूदा स्थिति से आगे बढ़ गए, जो यह सुनिश्चित करेगा कि किसी भी टैरिफ रियायत का लाभ उठाने के लिए दोनों अर्थव्यवस्थाओं में पर्याप्त प्रसंस्करण हो।

उत्पाद विशिष्ट नियमों (पीएसआर) के संबंध में, यह अधिकांश कच्चे कृषि उत्पादों के लिए पूर्ण रूप से प्राप्त किया जाता है। प्रसंस्कृत कृषि उत्पादों के लिए, यह या तो टैरिफ वर्गीकरण (सीटीसी) में बदलाव और मूल्यवर्धन या केवल सीटीसी का मिश्रण है। औद्योगिक वस्तुओं के लिए, यह काफी हद तक सीटीसी और मूल्यवर्धन, सह–समान नियमों के साथ–साथ सीटीसी का मिश्रण है। नियमों का उद्देश्य पर्याप्त प्रसंस्करण मानदंड और व्यापार सुविधा के बीच एक अच्छा संतुलन सुनिश्चित करना है।

इस व्यापार समझौते के ओरिजिनट्रैक के नियमों में कुछ प्रमुख अवधारणाएँ 10% की न्यूनतम सीमा हैं; अपर्याप्त कामकाज या प्रसंस्करण जो स्वयं मूल स्थिति प्रदान नहीं करेगा पारगमन के लिए लचीलापन लेकिन उचित दस्तावेज़ीकरण के साथ; उपयोग किए गए इनपुट आदि के लिए मूल प्रदान करने के लिए रोल–अप या अवशोषण प्रमाणन पर, भारत ने अपने निर्यातकों के लिए स्व–प्रमाणन की अवधारणा पेश की थी।

इससे निर्यातकों के लिए अनुपालन बोझ कम हो जाएगा। हालाँकि, ऐसे मामलों में जहां वे नियमों के बारे में सुनिश्चित नहीं हैं, अधिकृत एजेंसियों के माध्यम से प्रमाणन का विकल्प भी

मौजूद है। इन दोनों मूल प्रमाण पत्र का एक विशिष्ट प्रारूप है जिसे निर्यातकों को भरना और हस्ताक्षर करना होता है। यह सब डीजीएफटी के इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म के माध्यम से करना होगा जिसमें निर्यातकों को पंजीकृत होना होगा।

समझौते के लिए सत्यापन प्रक्रियाएँ मजबूत हैं। उत्पत्ति के सभी प्रमाणों के लिए एक प्रमाणीकरण तंत्र है। इसके अलावा, प्रक्रिया के लिए समय–सीमाएं हैं जो यह सुनिश्चित करती हैं कि सत्यापन शीघ्रता से किया जाए। इसके अलावा, आयात करने वाले देशों के सीमा शुल्क प्राधिकरण को उल्लंघन के मामले में टैरिफ रियायतों को निलंबित करने का अधिकार है। बार–बार उल्लंघन की स्थिति में विशिष्ट निर्यातकों और यहां तक कि उत्पादों के लिए रियायतों का अस्थायी निलंबन संभव है।

समझौते के तहत विशेष आर्थिक क्षेत्र और निर्यात उन्मुख इकाई (ईओयू) सहित भारतीय निर्यातकों को कुछ प्रमुख पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

I. निर्यात किए जा रहे उत्पाद की उत्पत्ति के नियम जानें

II. सुनिश्चित करें कि उत्पादन प्रक्रिया की मूल्य श्रृंखला के बारे में पर्याप्त जानकारी हो।

III. स्व–प्रमाणित केवल तभी करें जब आपके पास सभी दस्तावेज हों और निर्यात किए जा रहे उत्पाद की उत्पत्ति के नियमों के बारे में निश्चित हों।

IV. यह न मानें कि यदि कोई उत्पाद घरेलू बाजार से प्राप्त किया गया है, तो वह भारतीय मूल का है। पूरी तरह से प्राप्त मानदंडों का उपयोग केवल तभी करें जब कोई पूरी तरह से आश्वस्त हो कि पूरी उत्पादन प्रक्रिया भारत में हुई है। इस संदर्भ में, पूरी तरह से प्राप्त मतलब क्या है, इसके नियमों को पढ़ना महत्वपूर्ण है।

V. डीजीएफटी के इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म पर खुद को रजिस्टर करें

VI. उत्पाद की उत्पत्ति के नियमों की पुष्टि के लिए सभी आवश्यक दस्तावेज अपलोड करें

नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र का कार्यालय निर्यातकों की किसी भी मदद के लिए तैयार रहेगा।

कृपया बेझिझक dc@nsez.gov.in; jdc@nsez.gov.in; ddc1@nsez.gov.in; या ddc3@nsez.gov.in पर संपर्क करें।

*****

जनवरी-मार्च 2024 की अवधि के लिए आंचलिक एनएसईजेड की रिपोर्ट

1. माल निर्यात

जनवरी–मार्च 2024 की अवधि की दौरान आंचलिक नोएडा एसईजेड का कुल माल निर्यात 3712 करोड़ रुपए था। इन निर्यातों का एसईजेड–वार ब्योरा इस प्रकार है

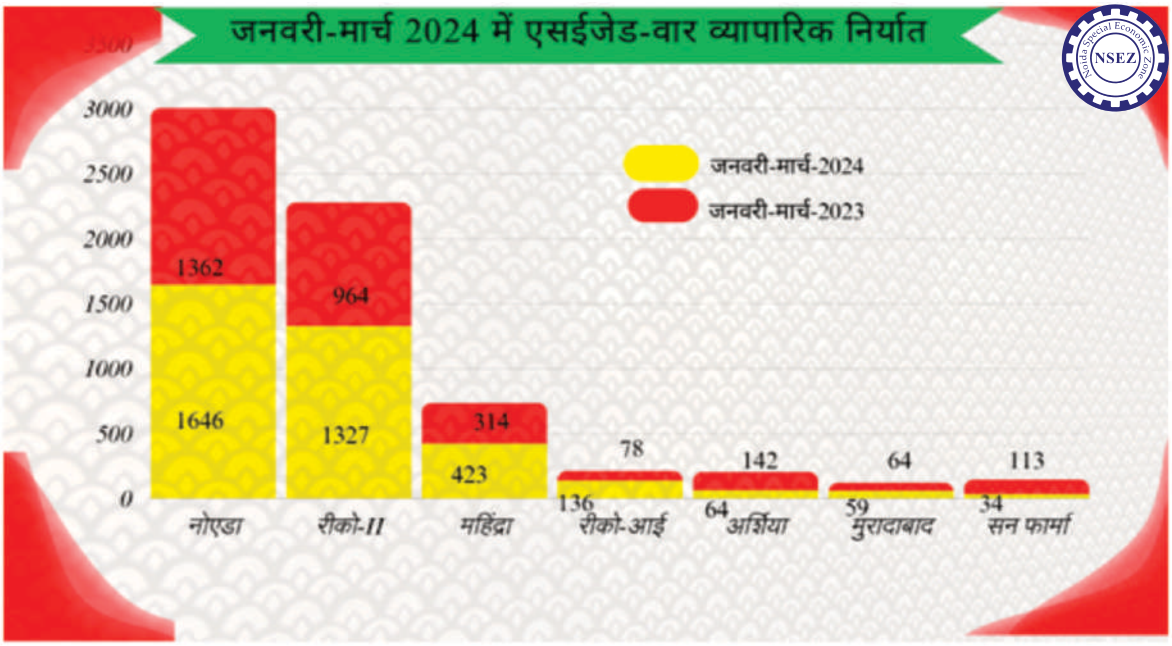

इन व्यापारिक निर्यात के लिए शीर्ष 10 गंतव्यों के प्रथम स्थान पर संयुक्त अरब अमीरात है।

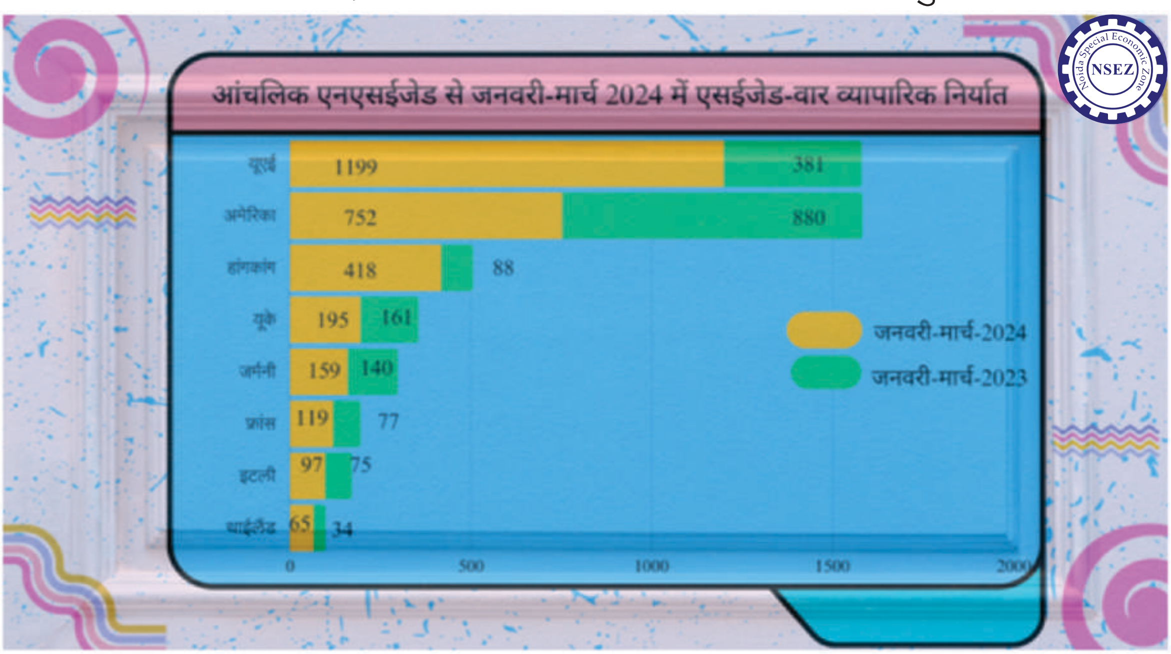

उपरोक्त एसईजेड में इस अवधि के लिए शीर्ष 3 निर्यातक एसईजेड इकाइयां इस प्रकार है।

A. नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. इडेमिया सिसकॉम

II. आईएसएम इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड

III. मेडिको इलेक्ट्रोड्स इंटरनेशनल लिमिटेड

B. जयपुर (सीतापुरा) विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. आइडियल फिस्कल सर्विसेज लिमिटेड

II. वैभव ग्लोबल लिमिटेड

III. सोनी इंटरनेशनल ज्वेलरी एमएफजी कंपनी

C. मुरादाबाद विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. दीवान इंडिया

II. सी एल गुप्ता ओवरसीज एलएलपी

III. पार्थ एक्सपोर्ट्स

D. महिंद्रा विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. निटप्रो इंटरनेशनल

II. मैक्सॉप इंजीनियरिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड

III. मरुधर क्वार्ट्ज सर्फेस प्राइवेट लिमिटेड

E. अन्य निजी विशेष आर्थिक क्षेत्र

I. सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड–I

II. सिद्धार्थ लॉजिस्टिक्स FTWZ प्राइवेट लिमिटेड

III.. अर्शिया लॉजिस्टिक्स सर्विसेज लिमिटेड

2. सेवाएं

जनवरी–मार्च 2024 की अवधि के दौरान आंचलिक नोएडा एसईजेड का कुल सेवा निर्यात 20243.9 करोड़ रुपए था। यह पिछले वर्ष की समान अवधि से 10% की वृद्धि है जिसमे निर्यात 18431.1 करोड़ रुपए था। सेवाओं का विवरण इस प्रकार है।

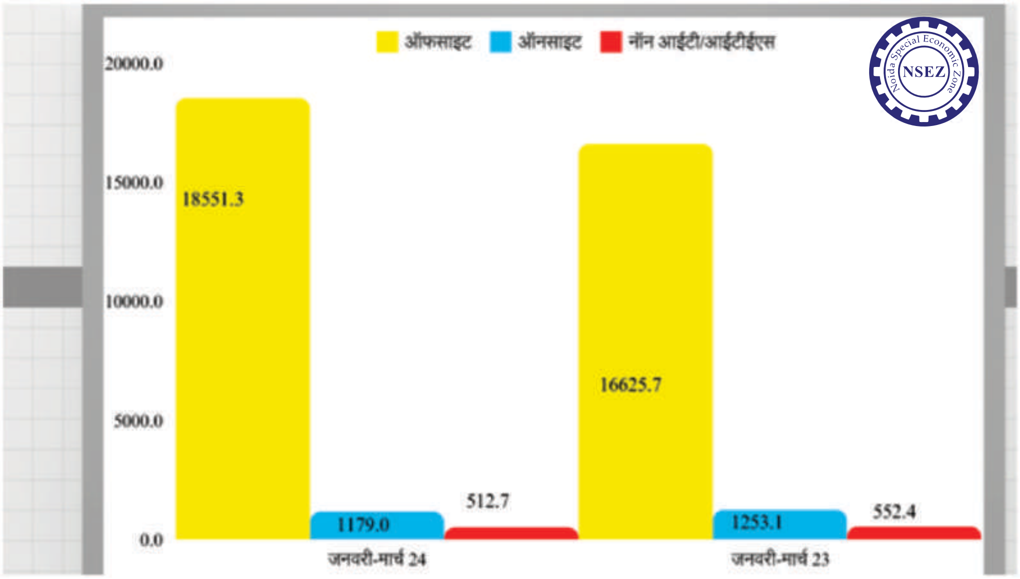

3. डीम्ड या मानित निर्यात

जनवरी–मार्च 2024 की अवधि के लिए आंचलिक नोएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयों द्वारा किया गया कुल निर्यात 124.6 करोड़ रुपए था। एसईजेड के अनुसार डीम्ड निर्यात इस प्रकार है।

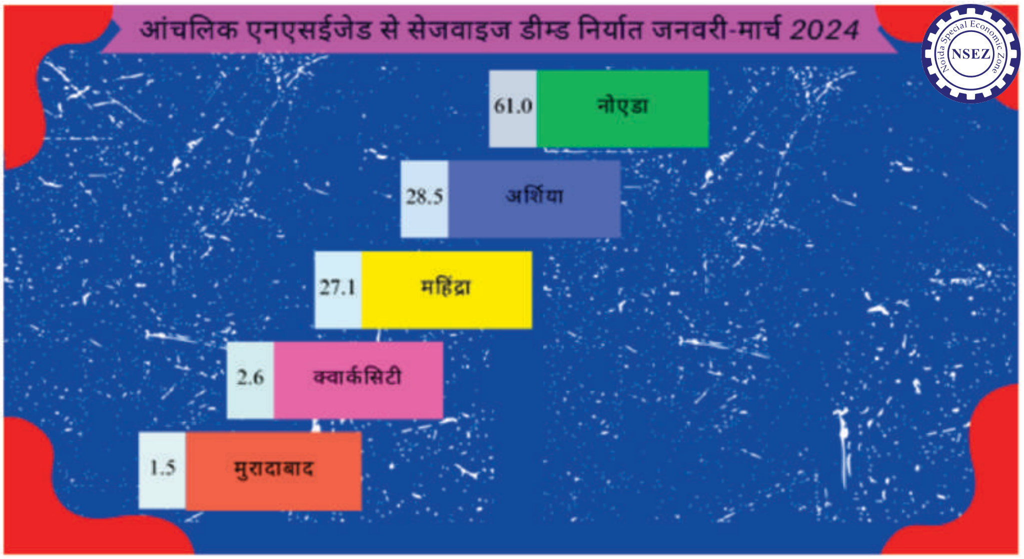

4. घरेलू खरीद

जनवरी–मार्च 2024 की अवधि के लिए आंचलिक नोएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयो द्वारा की गई कुल घरेलू खरीद 5883. करोड़ रूपए थी। यह घरेलू इनपुट (विनिर्माण और सेवा इकाईयों के लिए) की स्रोत का एक उपाय है, जिससे ''भारत से मेक इन इंडिया के लिए स्रोत की अवधारणा को बढ़ावा मिलता है। उक्त अवधि के लिए एसईजेड–प्रज्ञ घरेलू खरीद इस प्रकार है।

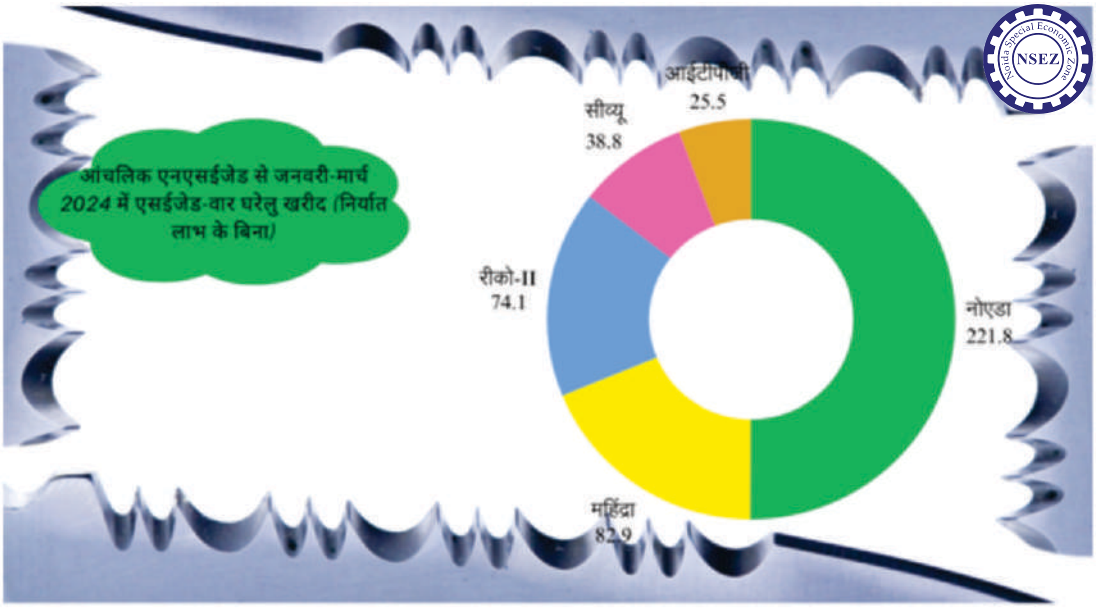

माल की क्षेत्रवार शीर्ष घरेलू खरीद इस प्रकार है।

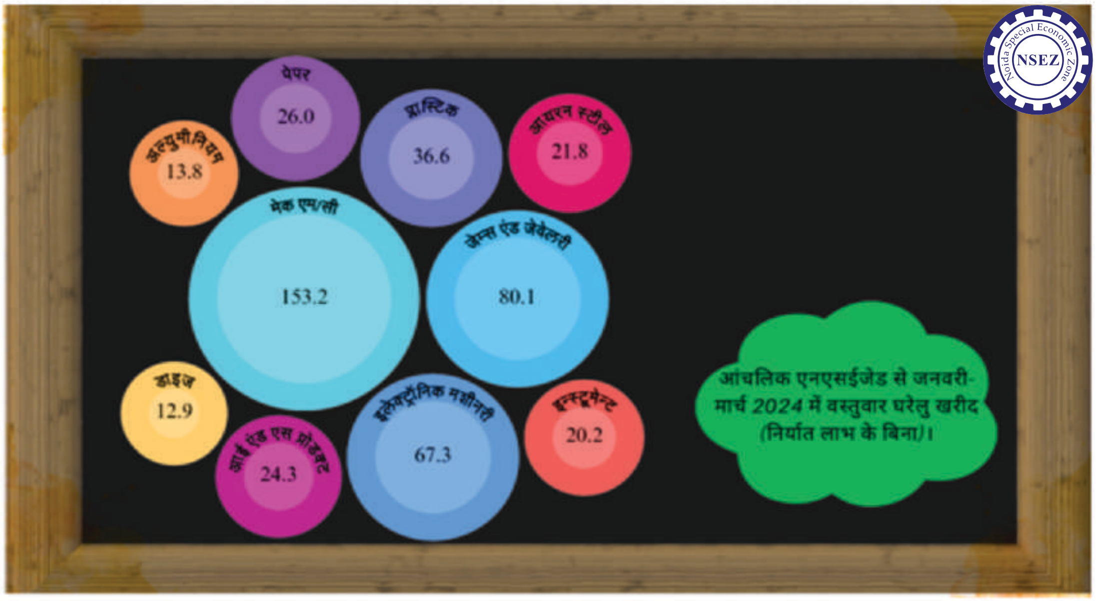

5. एसईजेड से एसईजेड आपूर्ति

जनवरी–मार्च 2024 की अवधि के लिए आंचलिक नोएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयों द्वारा की गई कुल एसईजेड आपूर्ति 111.5 करोड़ रुपए थी। (केवल यदि एसईजेड ऑनलाइन प्रणाली में इकाईयों द्वारा दर्ज किया गया हो)। एसईजेड के अनुसार शीर्ष अपूर्तियां इस प्रकार है।

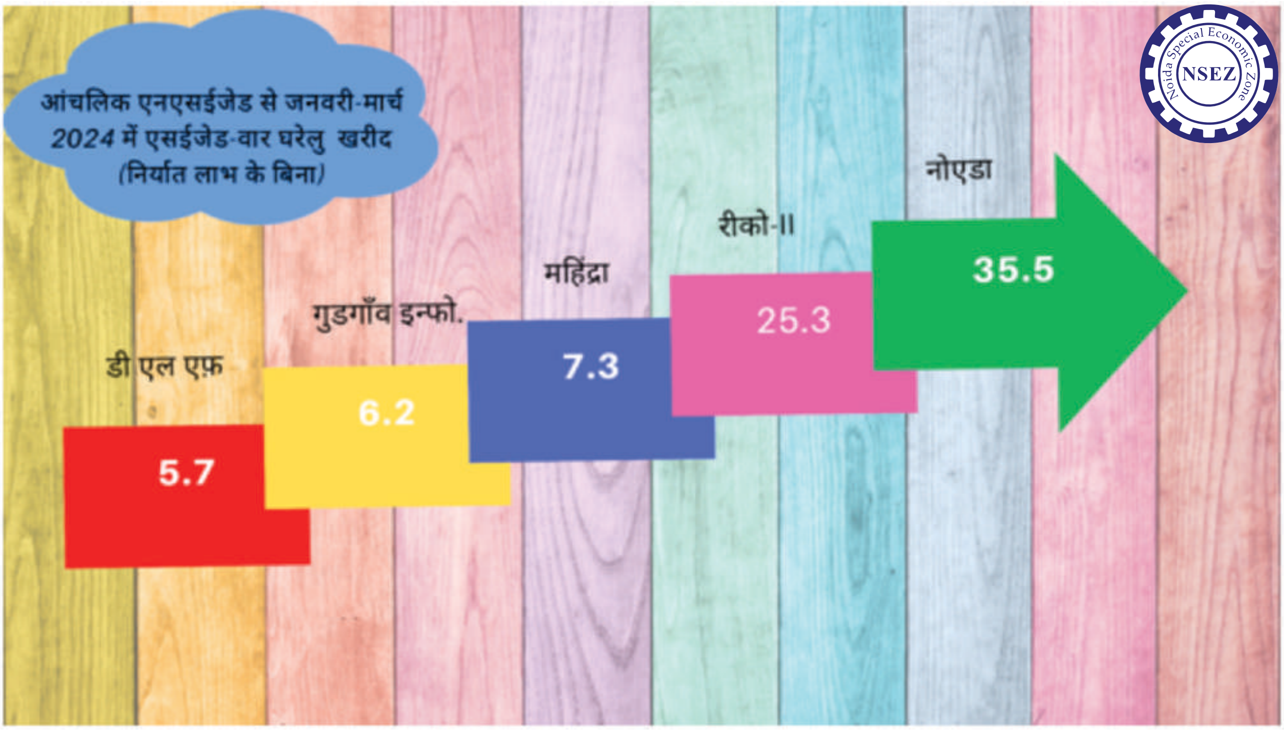

तिमाही (जनवरी-मार्च 2024) के दस्तावेजों का अनुवाद का विवरणः

क्रमांक	जनवरी 2024	शब्द	निर्णय संख्या
1.	उत्तर प्रदेश निजी (ग्रेटर नोएडा खुर्जा) आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (04 जनवरी 2024)	3048	8
2.	हरियाणा अनुमोदन समिति (04 जनवरी 2024)	1861	10
3.	नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र प्राधिकरण अनुमोदन समिति (05 जनवरी 2024)	1796	9
4.	नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (15 और 16 जनवरी 2024)	8770	16
5.	पंजाब/चंडीगढ अनुमोदन समिति (15 जनवरी 2024)	4075	14
6.	मुरादाबाद अनुमोदन समिति (15 जनवरी 2024)	1512	3
7.	सीतापुरा अनुमोदन समिति (23 जनवरी 2024)	4020	8
8.	महिंद्रा अनुमोदन समिति (23 जनवरी 2024)	1939	5
9.	नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र प्राधिकरण अनुमोदन समिति (24 जनवरी 2024)	1467	6
क्रमांक	**फरवरी 2024**	**शब्द**	**निर्णय संख्या**
1.	हरियाणा अनुमोदन समिति (01 फरवरी 2024)	2524	12
2.	उत्तर प्रदेश निजी (ग्रेटर नोएडा खुर्जा) आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (01 फरवरी 2024)	2864	8
3.	नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (06 फरवरी 2024)	4956	10
4.	नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (20 फरवरी 2024)	1891	5
5.	सीतापुरा अनुमोदन समिति (22 फरवरी 2024)	766	3
6.	पंजाब/चंडीगढ़ अनुमोदन समिति (27 फरवरी 2024)	996	2
क्रमांक	**मार्च 2024**	**शब्द**	**निर्णय संख्या**
1.	नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (05 मार्च 2024)	2319	5
2.	हरियाणा अनुमोदन समिति (07 मार्च 2024)	3152	10
3.	उत्तर प्रदेश निजी (ग्रेटर नोएडा खुर्जा) आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (7 अप्रैल 2024)	4837	15
4.	एचसीएल लखनऊ अनुमोदन समिति (07 मार्च 2024)	464	1
5.	पंजाब/चंडीगढ़ अनुमोदन समिति (18 मार्च 2024)	1264	2
6.	नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (19 मार्च 2024)	3283	11
7.	नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र प्राधिकरण अनुमोदन समिति (22 मार्च 2024)	5370	14
8.	सीतापुरा अनुमोदन समिति (23 मार्च 2024)	2520	9
	कुल योग :	**65694**	**186**

कर्मो के लेख/कर्मो का फल

दोस्तो आज मै कर्म के फल के बारे में कुछ बताना चाहता हूॅ। मै इस विषय में एक छोटी सी घटना का जिक्र करना चाहूॅगा। एक दिन मैने फेसबुक पर अनिरूद्धाचार्य जी का सतसंग सुना, सतसंग में आये एक भद्र पुरूष ने एक प्रश्न पूछा–कि आचार्य जी जब सभी कार्य भगवान की मर्जी से ही होते है तो फिर बुरे कर्मो का फल इंसान को क्यों मिलता है? बुरे कर्म भी तो ईश्वर की मर्जी से ही हुए हैं। इस पर आचार्य जी ने कहा कि आपने बहुत ही अच्छा व गहरा प्रश्न किया है मै इसका उत्तर भी अवश्य दूँगा। उन्होने प्रश्न का उत्तर कुछ इस प्रकार दिया–**कि अगर आपने एक गाडी लेकर किसी डाईवर को चलाने के लिए दे दी तो आप उस गाडी के मालिक हुए अगर उस गाडी का एक्सीडेन्ट हो जाता है तो इसमें आपकी गलती नही है बल्कि डाईवर की गलती है क्योंकि गाडी में ब्रेक और एक्सीलेटर लगा हुआ है ड्राईवर को उनका सही प्रयोग करना चाहिए था जो कि नही किया और गाडी का एक्सीडेन्ट हो गया उसकी सजा भी ड्राईवर को ही मिलेगी न कि मालिक को क्योकि आपने तो उससे एक्सीडेन्ट करने को नही कहा। उसी प्रकार भगवान ने हमे विवेक दिया है जिससे हम अच्छे और बुरे में फर्क कर सकते हैं परन्तु हम विवेक का इस्तेमाल नही करते और गलत कार्य करते है अत: उसका फल भी हमे ही मिलेगा न कि मालिक यानि भगवान को।**

दोस्तों मै इस उत्तर से पूर्णतः असहमत हूॅ क्योकि जब सभी कार्य ईश्वर की मर्जी से ही होते हैं तो वह एक्सीडेन्ट भी तो ईश्वर की मर्जी से ही हुआ अगर भगवान चाहते तो एक्सीडेन्ट नही होता। कोई भी व्यक्ति जान पूछकर लापरवाही नही करता और न ही कोई यह चाहता है कि उसका बुरा या नुकसान हो मगर फिर भी होता है। मेरा मानना है कि अच्छा और बुरा दोनो तरह का कार्य भगवान की ईच्छा से ही होता है। इस विषय में मैं एक दोहा लिखता हूॅ जो कि बहुत की प्रचलित हैः–

दोहाः-तेरी ईच्छा के बिना हे प्रभु मंगल मूल।
पत्ता तक हिलता नही खिले ना कोई फूल॥

इसका भावार्थ है कि भगवान की मर्जी के बिना इस संसार में पत्ता भी नही हिलता है और न ही कोई फूल खिलता है अर्थात मनुष्य के हाथ में कुछ भी नही है जो भी करता है वह ईश्वर ही करता है। मनुष्य के जीवन में जो भी होना होता है, अच्छा या बुरा वह उसके कर्म के अनुसार होता है, और वह सब पहले से ही लिखा होता है। मनुष्य संसार में अपने कर्मो का फल भोगने के लिए ही पैदा होता है। जो भी भाग्य में लिखा होता है वह मनुष्य को अवश्य भोगना पडता है। इस विषय में मैंने एक भजन लिखा है और कुछ प्रमाण भी दिये हैं। मुझे उम्मीद है कि भजन पढ़कर आप मेरी बात से सहमत हो जायेंगे ।

भजन

टेक– लेख कर्म के मिटते कोन्या होनी भी टलती ना
जितनी उम्र लिखी जिसकी उतना हो सै जीना

क0–1 –छठी के दिन बैठ बेमाता लेख लिखे सै सारे
कितने तेरे दुश्मन होंगे कितने यारे प्यारे
किस दिन तेरी इज्जत बिगडे किस दिन हो जयकारे
किस दिन तेरे टोटटा आवे किस दिन हो पौबारे

तोड– कद जीते और कद हारे कद घूँट सबर का पीना

क0–2 –मात पिता और बेटा बेटी कौण बणे घरवाली
कितने फागन खेलेगा तेरी कितनी मने दीवाली
कौण तुझे मारेगा बन्दे कौण करे रखवाली
सब बेमाता ने लिख राखा फुर्सत में बैठके ठाली

तोड– कद झेलेगा कंगाली कद चमके तेरा सफीना

क0–3 –बेमाता के लेख मिटे ना ऋषि मुनि समझाग्ये
होनी हो सै होने ने न्यू खोलके साफ बताग्ये
बडे बडे से ज्ञानी ध्यानी मात मौत से खाग्ये
वीर पुरूष वे कहलाये जो मौत देख हर्षाग्ये

तोड– काल के मुँह में सभी समाग्ये ठाडा हो या हीना

क0–4 –नही काल से कोई जीता सभी काल से हारे
भीष्म पितामह जैसे योद्धा एक दिन स्वर्ग सिधारे
उस रावण की कैद पडे थे सुनो देवता सारे
काल बलि ना बस में आया न्यू रावण गये मारे

तोड– समय के आगे **मोहन** प्यारे पेश कोई चलती ना

मोहन वीर रूहेला
सहायक विकास आयुक्त
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

जिंदगी का फलसफा

उसकी नम आँखे ये बताती है,

कि रात भर वो सोया नही,

हर सहर ने भी तो रात को देखा है,

तुम क्यों दिल में इतना वज़न संजोये बैठे हो,

खबर है हर शख्स को अपनी आस्तीन का,

पर नज़रे वो दूसरों पर गडाए बैठा है,

अगर लगता है कि तुम्ही सबकी खबर रखते हो,

तो यकीन मानों मेरे दोस्त यहां हर शाख पर उल्लू बैठा है।

भारत भूषण
सहायक
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

'मदर्स डे'

ये क्या बात हुई कि माँ को तोहफे देने के लिए
हर साल मदर्स डे का इंतजार करेंगे

जिसने पूरी जिन्दगी हमारे नाम लिख दी
क्या हम उसे तारीख देखकर सेलिब्रेट करेंगे

माँ सिर्फ एक इंसान नही, एक उत्सव है
ये उत्सव हर रोज मनाओ

हर दिन उसका कमरा फूलों से
और उसका दिल प्यार से सजाओ

आठ सौ करोड़ की आबादी वाली इस दुनिया में
कोई भी माँ की तरह नही

सोने के लिए उसकी गोद
और रोने के लिए उसका कंधा

इससे बेहतर कोई जगह नही
माँ वो दौलत है जो हमने बिन मांगे पाई है

वो बरकत है, जो बिन बुलांए आई है
हर दिन हर लम्हा 'मदर्स डे' मनाओ

क्योंकि एक तरफ है ये जग सारा
एक तरफ माँ है।

मुनत्याज
सहायक
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

-:कोशिश:-

लोग कहते है मेरे चेहरे पर मुस्कान बहुत है
इस धुवे में मेरी पहचान बहुत है

निराशा तो काफी है मेरी कश्ती में लेकिन
इस कश्ती को लड़ने के अरमान बहुत है

ना उम्मीद तो हुआ हजारो मर्तबा मगर
इस लिल में उम्मीदों के मकान बहुत है

टूटे पत्तो से ख्वाब सजाने वाला मै
सूखे पत्तों पर मुझे आन बहुत है

दो लफ्जो में बटे मेरे अक्षर देखो
इस ना चीज का यहाँ नाम बहुत है

हर कोशिश हारी कितनी मर्तबा मगर
हर कोशिश पर मुझे गुमान बहुत है।

मुनत्याज
सहायक
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

पीछे क्या रह गया

पांच माह के बच्चे को, नौकरानी के पास छोड़कर नौकरी पर जाने वाली माँ से, नौकरानी ने पूछा – मैडम कुछ रह तो नहीं गया आपका जैसे – आई कार्ड, पर्स, गाड़ी की चाबी सब ले लिया ना आपने । माँ कैसे हाँ कहे । रूपये–पैसे के पीछे दौड़ते–दौड़ते, सब कुछ पाने की इच्छा में । माँ जिसके लिये सब कुछ कर रही है, घर पर वही रह गया है !

तुम भले ही मुस्कुराओ सांथ बच्चों के मगर

बच्चों जैसा मुस्कुराना दोस्तों, आंसा नही..!!

शादी में लड़की को बिदा करने के बाद, शादी घर को खाली करते हुए। दुल्हन की बहन ने पूछा – पापा, यहाँ कुछ रह तो नहीं गया आपका ? एक बार ठीक से देख लो ! बाप देखने गया, तो – दुल्हन के कमरे में कुछ फूल सूखे पड़े थे। तब पापा को याद आया कि सब कुछ तो पीछे रह गया। मै बाईस साल से जो नाम लेकर जिसको आवाज देता था, लाड़–प्यार से, वो नाम पीछे रह गया, और उस नाम के आगे गर्व से मै जो नाम लगाता था, वो नाम भी पीछे रह गया अब। पापा, देखा आपने अब ? आपका कुछ पीछे रह तो नहीं गया ? छोटी लड़की के इस प्रश्न पर आँखों में आये आँसू छुपाते हए पापा जुबान से तो नहीं बोल पाया, पर दिल में एक ही आवाज थी – मेरा सब कुछ तो यहीं रह गया ! बड़े अरमानों के साथ बड़े–बड़े स्वपन देखकर–मैने अपने बेटे को पढ़ने विदेश के लिए भेजा था और कुदरत का करिश्मा देखो कि वह पढ़कर–लिखकर, नौकरी पाने के बाद विदेश मे ही अपना घर ले लिया और वह वहीं सैटल हो गया। बेटे ने वही पर शादी भी कर ली, शादी के बाद पौत्र जन्म पर बमुश्किल 3 माह का वीजा मिला था, 3 माह समय बीतने के बाद पापा के घर चलते वक्त बेटे ने प्रश्न किया पापा आपने सब कुछ चेक कर लिया ना ? आपका कुछ रह तो नहीं गया ? पापा बेचारे क्या जबाब देते, कि अब– अब छूटने को बचा ही क्या है !

अगर फुर्सत मिले पानी की तहरीरों को पढ़ लेना

हर इक दरिया हज़ारों साल का अफ्साना लिखता है

पापा की चलते उम्र के साथ एक समय ऐसा भी आया कि वह सेवा से निवृत हो गये । सेवानिवृत्ति की शाम को उनके पी.ए. ने याद दिलाया – सर आप अपना सारा सामान और सेवानिवृत्त के बाद मिला कैश सब कुछ चेक कर लें । आपका कुछ रह तो नहीं गया ? वह थोड़ा रूका, और सोचा कि मैने अपनी पूरी जिन्दगी तो यहीं आने–जाने में बीता दी । अब मेरी जिन्दगी मे और क्या रह गया होगा ।

सफर पीछे की जानिब है कदम आगे है मेरा

मैं बूढ़ा होता जाता हूँ जवाँ होने कीख़ातिर।

दाह संस्कार करने के बाद वहाँ से लौटते वक्त बेटे ने फिर से गर्दन घुमाई, एक बार पीछे देखने के लिए कि पीछे का किया नजारा है तो उसने देखा कि पिता की चिता की सुलगती आग देखकर मन भर आया। बेटा भागते हुए अपने पापा की जलती चिता की तरफ गया कि पिता के चेहरे की एक झलक देखने के लिए । लेकिन वह पिता का चेहरा देखने मे असफल रहा, एक बार फिर से कोशिश की – लेकिन सफलता हासिल नही मिली – और वह वापिस लौट आया।

उम्र भर मिलने नहीं देती हैं अब तो रंजिशें

वक्त हम से रूठ जाने की अदा तक ले गया।

घर आने के बाद बेटे के दोस्त ने पूछा, मेरे यार तेरा पीछे कुछ रह गया था क्या ? वह आंसुओं से भरी आँखों को रगड़ते हुए बोला – नहीं, कुछ भी नहीं रहा अब। माँ भी अपने बेटे को देखते हुए रो रही थी, एकदम गमगीन थी । बेटा अपनी माँ की तरफ देखते हुए बोला कि अब –जो कुछ भी रह गया है, वह सदा मेरे साथ रहेगा। एक बार आप सभी समय निकालकर सोचें, शायद आपको अपना पुराना समय याद आ जाए, आँखें भर आएं, और आज को जी भर जीने का मकसद मिल जाए ।

दुआएँ याद करा दी गई थीं बचपन में

सो ज़ख़्म खाते रहे और दुआ दिए गए हम

दोस्तों ! क्या पता ? कब इस जीवन की शाम हो जाये। इससे पहले कि ऐसा हो– सब को गले लगा लो, सबको अपना बना लो । दो प्यार भरी बातें कर लो अपनों से ताकि – कुछ छूट न जाये ।

कभी तो देख लिया करों, बुजुर्ग माँ बाप की आँखों में
वो ऐसा दर्पण है, जिनमें -बच्चें कभीं बूढ़े नहीं होतें !!

जाविर अली
आशुलिपिक
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

अनोखा घर

सबका अपना होता है,

सबको रहना होता है,

और जहाँ सुख–दुःख होता है,

वह अनोखा घर होता है।

चार–दीवार के अंदर रहते सब,

समय पता नही बीत जाता है कब,

वह अनोखा घर होता है।

जहाँ सब अपना काम करते है,

मिल–जुलकर साथ हमेशा रहते है,

वह अनोखा घर होता है।

संतोष कुमारी
सहायक
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

बेटी की बिदाई

कन्यादान हुआ जब पूरा आया समय विदाई का।
हँसी खुशी सब काम हुआ था, सारी रस्म अदाई का।।

बेटी के उस कातर स्वर ने, बाबुल को झकझोर दिया।
पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में छोड़ दिया।।

अपने आँगन की फुलवारी, मुझको सदा कहा तुमने।
मेरे रोने को पल भर भी, बिल्कुल नहीं सहा तुमने।।

क्या इस आँगन के कोने में, मेरा कुछ स्थान नहीं।
अब मेरे रोने का पापा, तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं।।

देखो अन्तिम बार देहरी, लोग मुझे पुजवाते हैं।।
आकर के पापा क्यों इनको, आप नहीं धमकाते हैं।।

नहीं रोकते चाचा ताऊ, भैया से भी आस नहीं।
ऐसी भी क्या निश्ठुरता है, कोई आता पास नहीं।।

बेटी की बातों को सुन के, पिता नहीं रह सका खड़ा।
उमड़ पड़े आँखों से आँसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा।।

कातर बछिया सी वह बेटी, लिपट पिता से रोती थी।
जैसे यादों के अक्षर वह, अश्रु बिंदु से धोती थी।।

माँ को लगा गोद से कोई, मानो सब कुछ छीन चला।
फूल सभी घर की फुलवारी से कोई ज्यों बीन चला।।

छोटा भाई भी कोने में, बैठा बैठा सुबक रहा।
उसको कौन करेगा चुप अब, वह कोने में दुबक चला।।

बेटी के जाने पर घर ने, जाने क्या क्या खोया है।।
कभी न रोने वाला बाप, फूट फूट कर रोया है------

श्री सूरज भान
उच्च श्रेणी लिपिक
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

होली आई रे.......

आओ चलो होली मनायें,
आओ चलो होली मनायें।
खेलें खुशियों के गुलाल से,
एक दूजे को रंग लगायें ।
सुन्दर सी रंगोली बनायें,
आओ चलो होली मनायें,
आओ चलो होली मनायें।
नये नये कपड़े सिलवायें,
नये विचार भी मन में लायें ।
नयी ऊर्जा से जोश बढ़ायें,
आओ चलो होली मनायें,
आओ चलो होली मनायें।
छोड़ कड़वाहट मीठा मुंह कर,
एक दूजे को गले लगायें ।
मन का गुस्सा दूर भगायें,
आओ चलो होली मनायें,
आओ चलो होली मनाये।
मौसम बदला खेत लहलहाए
सूरज निकला झोली फैलाये ।
छोटे–बड़ों का मान बढ़ायें,
आओ चलो होली मनायें,
आओ चलो होली मनाये।
जीवन छोटा बड़ी है खुशियाँ,
हँसी खुशी इसे अपनायें ।
बच्चों को भी यही सिखायें,
आओ चलो होली मनायें,
आओ चलो होली मनाये।

लीना यादव
पत्नी श्री विकास यादव
सहायक विकास आयुक्त, मुरादाबाद

प्यारी बिटिया

कलियों सी होती है बिटिया,
फूलों सी खिलती है बिटिया।
हो जाए गुस्सा फिर भी,
हंस के ही मिलती है बिटिया।

अपनों का बस प्यार वो चाहें,
फिर भी क्यों हम उनसे भागे।
चारों दिशा में आगे बढ़ती,
पतंग सी उड़ती है बिटिया।

अगर मौका मिले उन्हें भी,
खुद को साबित करती बिटिया।
लाख मुश्किलें हो जीवन में,
फिर भी आगे बढ़ती बिटिया।

कितनी उलझन कितनी तड़पन,
फिर भी हंस के सहती बिटिया।
इतने पर भी तिरस्कार क्यों,
क्यों नही लगती अच्छी बिटिया।

सोच हमारी कब बदलेगी,
यह अब हमसे कहती बिटिया।
अब न बांध सकागे पंख हमारे,
खुले आसमां में उड़ेगी बिटिया।

लीना यादव
पत्नी श्री विकास यादव
सहायक विकास आयुक्त, मुरादाबाद

हमारी जयपुर यात्रा

राजस्थान की राजधानी जयपुर भारतीय संस्कृति और विरासत का एक अनमोल खजाना है। इस शहर में एक साथ विचित्रता, इतिहास, और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्वितीय संगम है। जयपुर को 'गुलाबी नगर' या 'पिंक सिटी' के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यहाँ के भव्य महलों और इमारतों की वजह से यह पिंक रंग से भरी हुई है। जयपुर का शुरुआती इतिहास 1727 में महाराजा जय सिंह द्वारा बसाया गया था। यहाँ के इमारतें और सड़कें परिष्कृत और सुंदरता से भरी हुई हैं, जो इसे भारतीय शहरों में एक अलग पहचान देती है।

हमारी जयपुर यात्रा कि शुरुआत परिवार के साथ बिड़ला मंदिर से हुई। यह मंदिर बहुत ही सुंदर बना हुआ है इस मंदिर कि खासियत यह है कि यह मंदिर गर्मियों मे बिना किसी एसी के लगे हुए बहुत ठंडा रहता है क्यूंकि यह सफेद मार्बल से बना है । इस मंदिर मैं भगवान नारायण की भव्य मूर्ति देखने लायक है। बिड़ला मंदिर देखने के बाद हम अल्बर्ट हॉल म्यूजीअम गए वहाँ पर हमने जो पुराने समय में उपयोग होने वाले हथियार देखे। वहाँ पर एक ममी रखी हुई थी जो कि लगभग 500 से 600 साल पुरानी थी और बहुत सारी कलाकृतिया देखने लायक थी । फिर उसके बाद हमारी गाड़ी हवा महल जाके रुकी जहां रानी व उनकी दासिया गर्मियों मे हवा लेने आया करती थी हवा महल मे राजस्थान का परंपरागत नृत्य कठपुतली देखने को मिला जोकि बहुत ही मनभावन था।

जो भी व्यक्ति प्राचीन सभ्यता और इतिहास मैं रुचि रखता है उसे जयपुर के किलों एवं महलों को एक बार अवश्य देखना चाहिए। इन सभी को देखने के बाद दोपहर का वक्त हो गया था तो फिर हमने एक भोजनालय मैं खाना खाया दाल, बाटी, एवं चूरमा यहाँ का प्रसिद्ध भोजन है। खाना खाने के बाद हमारी गाड़ी नाहरगढ़ किले के तरफ गई। नाहर गढ़ किला बहुत ही पुराना किला है उस समय पर होने वाली बारिश के पानी को इकट्ठा करने के लिए वहाँ एक गड्ढे को इस तरह से बनाया गया है कि बारिश के पानी से महल को कोई नुकसान ना पहुचे। नाहरगढ़ किला बहुत ही सुंदर व देखने लायक बना हुआ है। नाहरगढ़ का किला देखने के बाद हम जयगढ़ का किला देखने गए । जयगढ़ किले का निर्माण 1729 से 1732 ईसवी के मध्य में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय के द्वारा किया गया था और उन्होंने

लगभग 1744 ईसवी तक शासन किया। इस किले का नाम इसके शासक 'सवाई जय सिंह' के नाम पर रखा गया। इस किले को सबसे मजबूत किला कहा जाता हैं। इस किले को कभी किसी बड़े हमले का सामना नहीं करना पड़ा। इस किले में विश्व की सबसे बड़ी तोप (जयवान) को रखा गया हैं। जयवान तोप की नाल कि लंबाई लगभग 20 फीट और गोलाई 8 फीट है और इसका वजन लगभग 50 टन है। यह किला बहुत बीच मे फेला हुआ है यहाँ पर उपयोग मे लाए गए बहुत से हथियार, तलवारे और गोले आज भी रखे हुए हैं। यहाँ पर ऊंट की सवारी करने में और यहाँ से जयपुर शहर को देखने में अलग ही आनंद आता है जयगढ़ किले से आमेर के किले तक जाने का एक अलग रास्ता है पुराने समय में होने वाली लड़ाइयों में इसका उपयोग किया जाता था ।

कभी ना कभी जीवन में व्यक्ति को एक बार जयपुर जरूर घूमने जाना चाहिए। जयपुर यात्रा आपको भारतीय संस्कृति के खजाने से रूबरू कराएगी और आपके जीवन के सबसे यादगार लम्हों में से एक बनेगी।

दीपक कुमार
सॉफ्टवेयर डेवलपर

वृक्ष ही जीवन

वृक्ष ही जीवन का आधार है,
प्राणियों का यह उद्धार है।
शाखाओं से फैलता है आश्रय,
प्रेम और सद्भावना का निवास स्थान है।
पत्तों की सर्वर्ण छाया में,
मिलता सुकून और सजीवता की खुशबू है।
जीवन को देता है प्रेरणा,
निरंतर बढ़ता रहता है यह कदम–कदम अनंत।
वृक्ष ही नहीं,सभी को सिखाता है,
संयम,सहनशीलता,और धैर्य का अद्भुत पाठ है।
सृजनशीलता का प्रतीक,नई उम्मीद की किरण।
वृक्ष है जीवन का पुण्य कथा कहने वाला अमर वंश।
इसलिए, वृक्षों को करें नमनजीवन का महत्व
और सार्थकता को हम सब मिलकर समझें।

हरीश पाल
वरिष्ठ कार्यकारी

एक 'उड़ान' जीवन की

उड़ान क्या है? क्या ये हवाई जहाज द्वारा भरी गई है? या फिर चिड़िया के द्वारा? नहीं ! यह सब असली उड़ान नहीं है। असली उड़ान यह है कि जब राइट **बंधु, ऑरविल राइट** और **विल्बर राइट** जिन्हें आविष्कार, निर्माण और उड़ान का श्रेय दिया जाता है, कई प्रयास लगे हवाई जहाज को सफल बनाने में, जब हवाई जहाज उड़ा तब राइट **बंधु** ने अपने जीवन की असली उड़ान भरी और उसके मजे लिए।

एक विद्यार्थी के जीवन में उड़ान का तब तक कोई महत्व नहीं होता, जब तक वह अपना लक्ष्य हासिल न कर ले, पर लक्ष्य हासिल करना आसान नहीं होता उसे हासिल करने में बहुत कठिनाईयां आती हैं लेकिन कुछ लोग कड़ी मेहनत करके आगे निकल जाते हैं और कुछ लोग पीछे रह जाते हैं। मैंने कहानियों में सुना है कि एक चील जिसकी उम्र 70 साल होती है, उसके चोंच और पंजे 35 साल के उम्र में खराब हो जाते हैं जिससे वह शिकार को पकड़ नहीं पाता फिर भी वह हार नहीं मानता। वह एक ऊँची सी पहाड़ की चोटी पर बैठ जाता है और अपने चोंच और पंजे को पत्थर पर मार–मार कर तोड़ देता है और कुछ महीने बाद उसे नये चोंच और पंजे उग आते हैं और फिर वह एक बार आसमान में उड़ान भरता है शिकार करने के लिए....

इस कहानी से सीख ये मिलती है की ऐसे ही विद्यार्थियों को भी अपनी परेशानियों पर पत्थर मार–मार कर तोड़ देना चाहिए और कड़ी मेहनत कर कामयाबी हासिल करनी चाहिए यही एक विद्यार्थी के लिए है असली उड़ान.....।

अभिज्ञान शुक्ल
पुत्र श्री अशोक शुक्ल
वरिष्ठ कार्यकारी
कक्षा –7, डी वी एम पब्लिक स्कूल, कुलेसरा, ग्रेटर नॉएडा

मोबाइल फोन

मोबाइल फोन, आजकल की तकनीकी युग में एक ऐसा उपकरण बन चुका है जो हर किसी के पास मौजूद है। यह उपकरण न केवल हमें आपस में जोड़ता है, बल्कि हमें दुनिया के साथ भी जोड़ता है। लेकिन कई बार यह उपकरण हमें बड़ी ही समस्याओं में डाल सकता है। इसे हम मोबाइल फोन की लत कह सकते हैं।

मोबाइल फोन की लत वास्तव में एक चिंता का विषय बन चुका है, खास कर युवा पीढ़ी व छोटे बच्चो के लिए। आज कल के दौर में, लोग अपने मोबाइल फोन के बिना एक पल भी नहीं रह सकते हैं। यह उनके साथ हर जगह जाता है, चाहे वह एक सभा हो या खाना। लोग दोस्तों के साथ बातें करने के बजाय अपने फोनों पर चिपके रहते हैं। यह एक ऐसा माध्यम बन गया है जिसके बिना लोग अधूरे महसूस करते हैं।

मोबाइल फोन की लत का असर सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी पर होता है। युवा लोग अक्सर अपना समय मोबाइल फोन पर बिताते हैं, जिससे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। उनके पास अनेक संभावित विकल्प होते हैं, जैसे कि खेल, उत्सव, या सामाजिक संवाद, लेकिन वे मोबाइल फोन के चारों तरफ ही लगे रहते हैं।

मोबाइल फोन की लत के निराधार उपयोग से लोगों के बीच संवाद की कमी होती है। लोग अपने आस–पास के लोगों से बात नहीं करते, और इससे उनका समाजिक जीवन प्रभावित होता है। ऐसे में, मोबाइल फोन की लत न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी बिगाड़ सकती है।

मोबाइल फोन की लत से लोग रात को मोबाइल फोन का उपयोग करने से, बच्चों को नींद की समस्या हो सकती है। एक अधिक निरंतर उपयोग की वजह से, उनका समयित नींद की मात्रा कम हो सकती है, जिससे उनका शिक्षात्मक और सामाजिक प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है।

आज से कुछ ही समय पहले बच्चे घर से बाहर पार्को में घुमने जाते थे। गली में नए–2 खेल खेलते थे। लेकिन आज इसके विपरीत है आज के समय में बच्चे मोबाइल को छोड़ कर कही नही जाना चाहते। मोबाइल ही उनकी दुनिया है। इससे काफी तरह के दुष्प्रभाव देखने को भी मिल रहे है जैसे– Virtual Autism जो की आज के समय में बहुत ज्यादा देखने को मिल

रही बीमारी है । बच्चो का देरी से बोलना, मानसिक व शारीरिक विकास पर प्रभाव आदि । लेकिन, मोबाइल फोन की लत से बचना भी संभव है। हमें स्वयं को सीमित करना होगा, और अपने समय का प्रबंधन करना होगा। हमें अपने सोशल मीडिया खातों को संयंत्रित रूप से इस्तेमाल करना चाहिए, और अपने समय का नियमित रूप से व्यय करना चाहिए। अगर हम समय का उपयोग सही तरीके से करेंगे, तो हमें मोबाइल फोन की लत से बचाव संभव हो सकता है। बच्चो के लिए मोबाइल का समय सुनिश्चित करना होगा और पुरे दिन में ज्यादा से ज्यादा मात्र 30 मिनट का ही स्क्रीन टाइम होना चाहिए और माता पिता को भी चाहिए की बच्चो के सामने फोन का इस्तेमाल जितना कम हो उतना करें । जो बच्चा देखता है वही वो करना चाहता है । बच्चो के साथ खेले और उनको नई–2 एक्टिविटी करवाए ।

समाप्ति में, मोबाइल फोन की लत एक चुनौती है जिसका सामना हमें दृढ़ निश्चय के साथ करना है। ज्यादा से ज्यादा समय हमे अपने परिवार को देना है । नियमित शारीरिक व्यायाम करना है जिससे शरीर का विकास अच्छे से हो व बीमारी रहित शरीर रहे ।

आकाश शर्मा
वरिष्ठ कार्यकारी

दयालु चरवाहा

एक घने जंगल में नदी किनारे एक गरीब लकडहारा अपने परिवार के साथ रहता था, वह अपने परिवार का पालन पोषण जंगल से लकडियां काट कर उसे बेच कर करता था, बहुत समय बाद उसकी पत्नी को एक बच्चा हुआ उसने अपने पुत्र का नाम भगवान गोपाल के नाम पर गोपाल रखा तो उसकी पत्नी ने भगवान से प्रार्थना की, भगवान मेरे पुत्र की हमेशा रक्षा करना। कुछ समय पश्चात् उसके पति की मृत्यु हो गयी, अब उस पर घर की सारी जिम्मेदारी आ गयी एवं उसका बच्चा भी स्कूल जाने लगा। जब गोपल स्कूल जाता तो जंगल के सारे जानवर शोर मचाते जिससे गोपाल को डर लगता। वह कुछ दिनों तक तो सहता रहा एक दिन उसने अपनी माँ से कहा कि कल से मै स्कूल नही जाऊंगा। मुझे जंगल में शेर और जंगल के सभी जानवरों से डर लगता। उसकी माँ ने कहा तुझे डरने की कोई जरुरत नही है जंगल में तुम्हारा बड़ा भाई गोपाल रहता है जब भी तुझे डर लगे उसे बुला लेना वह तुम्हारी सहायता के लिए आ जाएगा।

तब से जब भी गोपाल स्कूल जाता तो वह अपनी सहायता के लिए अपने बड़े भाई गोपाल को बुला लेता जिससे दोनों बात–चीत करते हुए जंगल के रास्ते स्कूल जाते। एक बार स्कूल में वार्षिक कार्यक्रम पर गोपाल के अध्यापक ने सब बच्चों से बोला कि अपने अपने घर से कुछ नये–2 पकवान बनवा कर लाये, लेकिन गोपाल बहुत ही गरीब था उसके घर पर एक समय ही खाना बनता था, वह स्कूल में होने वाले वार्षिक कार्यक्रम के लिए पकवान कहा से लाये। तभी उसे अपनी माँ की बात याद आ गयी कि जब भी कोई दुविधा आये तो अपने बड़े भाई गोपाल को याद करना वह तुम्हारी सहायता के लिए जरूर आयेगा। उसने सारी बात अपने बड़े भाई गोपाल को बता दी। जिससे गोपाल ने कहा घबराने की कोई जरुरत नही है तुम इस खीर से भरी मटकी को ले कर जाना और अपने अध्यापक और अपने मित्रो को खिला देना। गोपाल मटकी को ले कर स्कूल पहुँच गया उसने मटकी अपने अध्यापक को दे दी। अध्यापक और सब बच्चो ने खीर खायी, खीर बहुत स्वादिष्ट थी, सब ने पेट भर कर खायी लेकिन मटकी में से खीर कम नही हुई। यह सब देख कर सब आश्चर्यचकित हुए और सब अध्यापक ने गोपाल से बोला की ये खीर कहा से ले कर आये हो, तो उसने कहा की जंगल में मेरा बड़ा भाई रहता है जो एक चरवाहा है उसने मुझे दी है। अध्यापक ने कहा कल अपने भाई को स्कूल ले कर आना, अपने अध्यापक के कहे अनुसार जब गोपाल अपने बड़े भाई के पास गया और उसने सारी बात बताई तो उसके बड़े भाई गोपाल ने मना नही किया लेकिन उसके बचपन में माँ से शर्त थी की वह सहायता तो करेगा लेकिन किसी को दिखायी नही देगा।

अध्यापक के कहने अनुसार जब गोपाल अपने बड़े भाई को अगले दिन स्कूल ले कर गया तो एक अजीब सा प्रकाश स्कूल में हो गया जिससे सब की आंखे बंद हो गयी और सब नतमस्तक हो गये।

नित्या सिंह
पुत्री प्रवीन
शिव नादर स्कूल, कक्षा 6 (कान्हा)

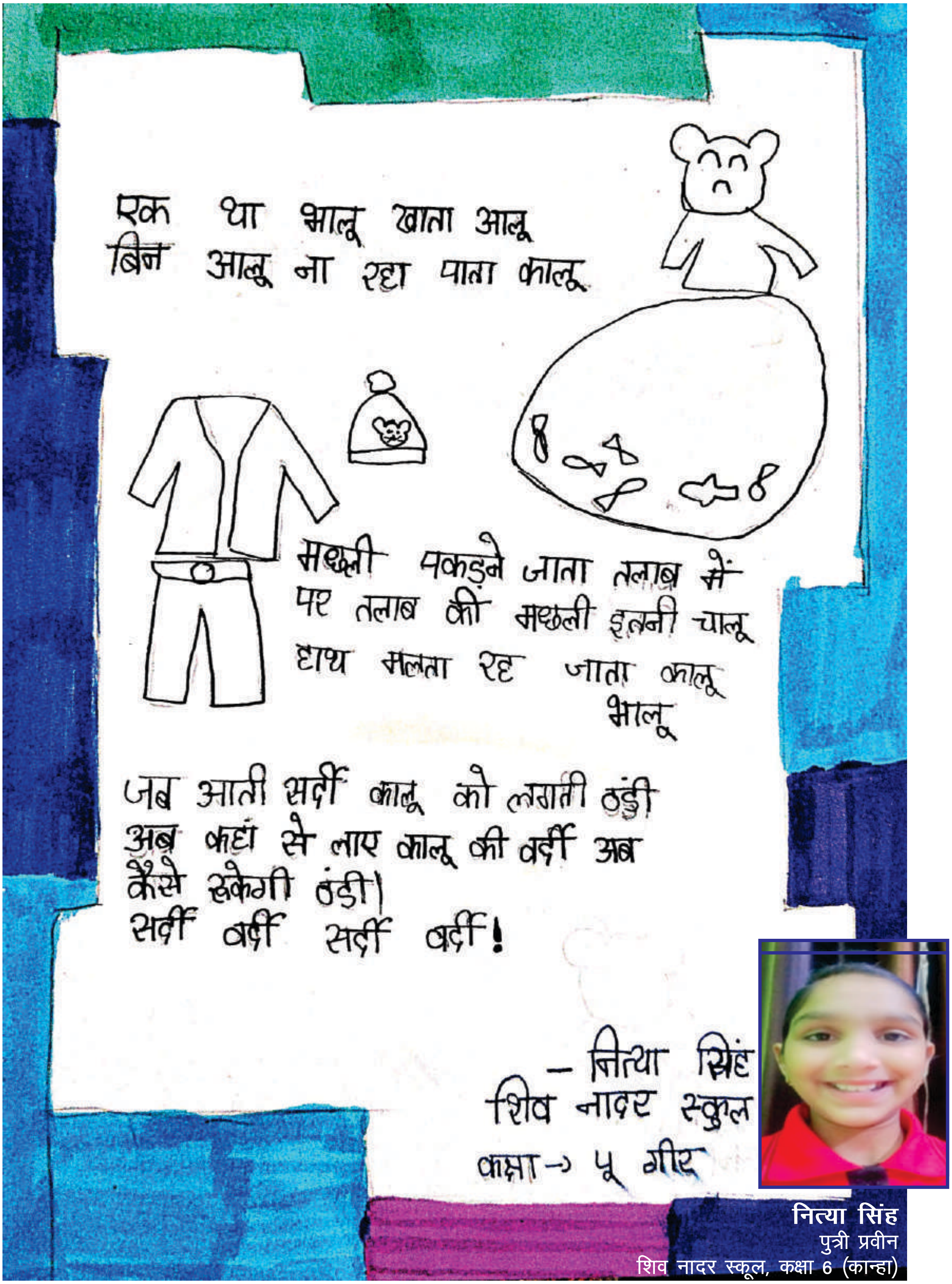

नित्या सिंह
पुत्री प्रवीन
शिव नादर स्कूल, कक्षा 6 (कान्हा)

जिंदगी एक सफर.......

जिंदगी एक सफर है सुहाना ।

जो बीत गया पल कहाँ आना ।

यहाँ शाम से मौसम है सुहाना ।

कहीं छलक न जाये खुशी का पैमाना ।

सफर में मौत का नही कोई ठिकाना ।

आज है कल जहाँ को छोड़कर हैं जाना ।

दुनिया में हँसने को हमें चाहिए बस बहाना ।

छोटी छोटी खुशियों में अब दिन है बिताना ।

दुनिया से भी न शिकवा है न कोई बहाना ।

जो मिले जिंदगी में उसी में जिंदगी बिताना ।

जिंदगी एक सफर है सुहाना ।

शुभम यादव
कार्यकारी

सचल दूरभाष यंत्र:- एक प्रेम कथा।

तुम्हें सचल दूरभाष यंत्र पर दस्तरस है,
कॉल-मेसेज बड़ा जानते हो,
तो फिर ये बताओ कि तुम,
उसकी बैटरी के बारे में क्या जानते हो ?
ये इन्स्टा, फेसबुक, स्नेपचैट, व्हाट्सएप,
कैमरा , कैलकुलेटर ÷, कैनवा वगैरह,
ये सब जानना भी अहम है,
मगर उसके यूआई का पता जानते हो ?

मोबाइल फ़ोन की रिंगटोन सुनके, सांसें तेज़ हो जाती है ,
देख बैटरी की प्रतिशत %, बची कुची रुक जाती है।
शांत अवस्था जो कर दूँ, सूचनाएं बंद हो जाती है,
पता नहीं कौनसी मित्र कब कॉल कर जाती है ॥

मोबाइल का साइलेंट रहना मेरे ज़हन में क्या बैठ गया,
इतनी तेज कॉल पे बोला कि स्पीकर बैठ गया।
यूँ नहीं है कि फ़कत मैं ही उसे चाहता हूँ,
जो भी मोबाइल को लेके बैठा, बैठ गया।
इतना मीठा था वो रेडिएशन भरा लहजा मत पूछ,
जिस जिसने इसको सीने से लगाया, कल्पनात्मक लेट गया ॥

राजेश चौहान
कार्यकारी

आज का जीवन

1. हम कितने स्मार्ट हो गए ...2
जीवन भर जो साथ रहे वो
अंत समय दो पार्ट हो गए
हम कितने स्मार्ट हो....2

2. रुखी सुखी जी भर खाते
रोज पनीर कहा से लाते
लेकिन इतने मेहनत कस थे
पत्थर तलक हजम कर जाते
पहले जैसी बात नहीं है
उम्र 42 दांत नहीं है
40 में दिखाते है बूढ़े
पहले जैसी आत नहीं है
घर घर दीवारों पे लटके, डाईट वाली चाट हो गए
हम कितने स्मार्ट हो गए....2

3. था एक दौर गरीबी होती
मर्यादा तब भी ना खोती
बेसक थे पैबंद लगे पर
इज्जत ढकती थी दो धोती
पर अब पच्छिम रित रंगे है
फटी जींस जो भिखमंगे है
वस्त्रो कि हालत एसी जो
देहि पर कटपीस टंगे है
ऐसी हालत तब है जब की,गली गली भी मार्ट हो गये
हम कितने स्मार्ट हो गये ...

खा कर जिसका दाना पानी
चढ़ी हुई अलमस्त जवानी
आज उसीको भूल गया तू
पा कर के सपनो कि रानी
ऐही गलत एक कम कर दिया
सब कुछ तेरे नाम कर दिया
पर तूने वो निरे कसाईं
जीना तलक हराम करदिया
जीवन भर जो साथ जिए वो,अंत समय को पार्ट हो गए
हम कितने स्मार्ट हो गए.....

भोला प्रसाद यादव
(कार्यकारी)

वृद्धाश्रम
(जीवन स्वार्थीपूर्ण)

जीवन की इस सांध्यकाल में जब मां–पिता बूढ़े होते हैं ।।
तब क्यों इनके अपने बच्चे ही इन्हें वृध्दाश्रम में छोड़ देते हैं ।।

मां–पिता जीवन भर इन्हें अपने खून–पसीने से सींचते हैं ।।
फिर कैसे इनके बच्चे इन्हें बुढ़ापे में खून के आंसू रुलाते हैं ।।

जब ये खुद बच्चे थे, तो माता–पिता ही इनका सहारा होते थे ।।
आज जब उन्हें है इनकी जरूरत तो देखो कैसे कतराते हैं ।।

हम दो और हमारे की भाषा थोड़ी स्वार्थीपूर्ण होती हैं ।।
ना भूले की हम जो बोते है वहीं काटना भी पड़ता हैं ।।

संपत्ति के बटवारे लेकिन कोई लज्जा महसूस नहीं होती हैं ।।
मगर उन्हें अपने साथ रखने में बहुत दिक्कत होती हैं ।।

अब वो भी एस कड़वी सच्चाई को स्वीकार कर लेते हैं ।।
और बच्चों की खुशी के लिए वो ये अंतिम त्याग भी कर देते हैं ।।

धीरेन्द्र चौहान
कार्यकारी

यशिका रूहेला
पुत्री श्री मोहन वीर रूहेला
सहायक विकास आयुक्त
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

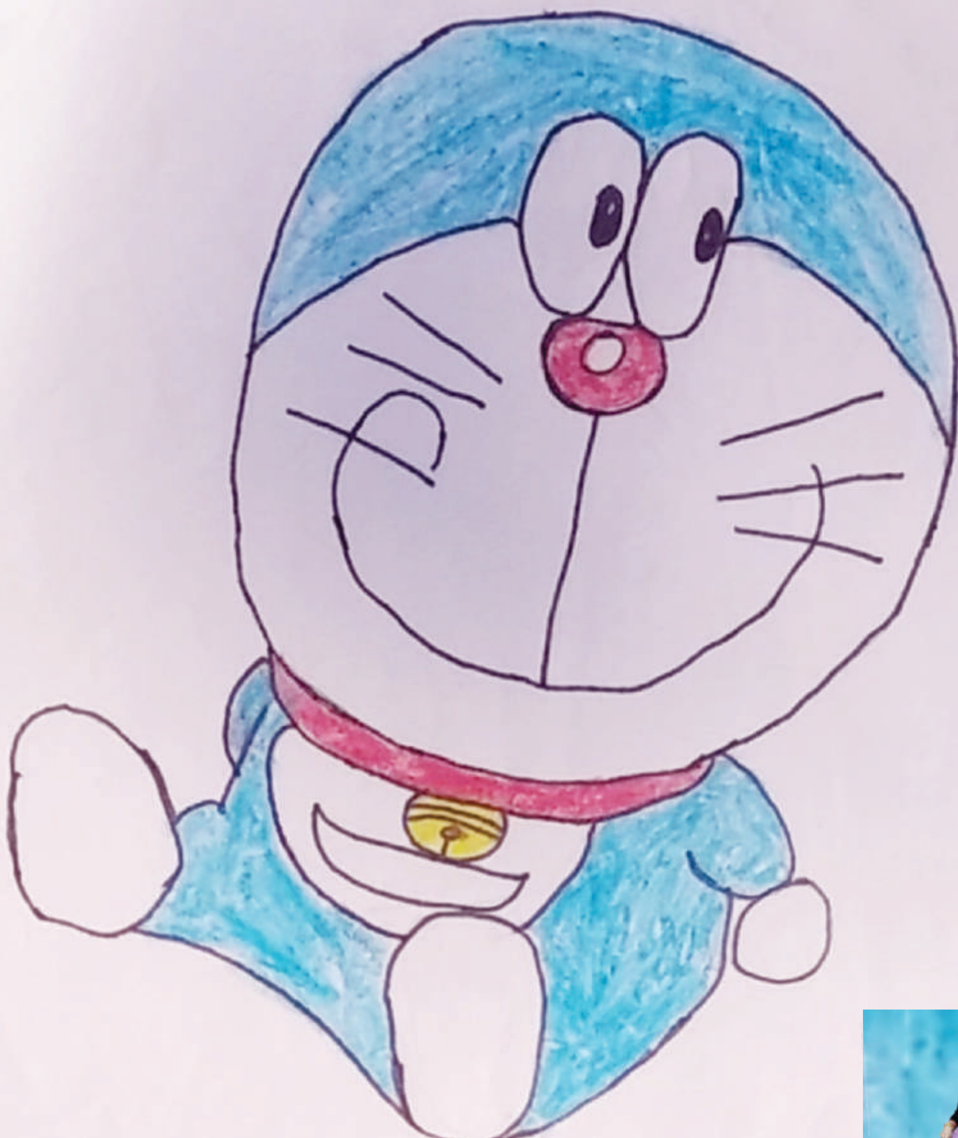

आलिया
पुत्री कमल
वरिष्ठ कार्यकारी

अलिजा
पुत्री कमल
वरिष्ठ कार्यकारी

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग
विकास आयुक्त का कार्यालय
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र
नौएडा दादरी रोड, फेस–II, नौएडा– 201305
फोन संख्या– 0120–2567268/69/70
फैक्स संख्या– 0120–2562314
नगर कार्यालयः– 8 जी, 8वां तल, हंसालय बिल्डिंग, 15 बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली–110001
Email: dc@nsez.gov.in **Website:** www.nsez.gov.in

अधिकारियों की सूची

नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र				
क्र.सं	अधिकारी का नाम	पद नाम	टेलीफोन संख्या	ई–मेल
1.	श्री अ. बिपिन मेनन	विकास आयुक्त	0120-2562315 (17)	dc@nsez.gov.in
2.	श्री सुरेन्द्र मलिक	संयुक्त विकास आयुक्त	0120-2567274 (18)	jdc@nsez.gov.in
3.	श्री अमित कुमार गुप्ता	उपायुक्त (सीमा शुल्क)	0120-2462667 (19)	akgupta@nsez.gov.in
4.	श्री नितिन गुप्ता	उप विकास आयुक्त	0120-2567271 (20)	ddc1@nsez.gov.in
5.	श्री ग्या प्रसाद	उप विकास आयुक्त	0120-2567275 (49)	ddc2@nsez.gov.in
6.	श्री किरन मोहन मोहाडिकर	उप विकास आयुक्त	0120-2567273 (21)	ddc3@nsez.gov.in
7.	श्री अजय कुमार मिश्र	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	0120-2567270 (23)	sr.ao@nsez.gov.in
8.	श्री मोहन वीर रूहेला	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270 (52)	adc2@nsez.gov.in
9.	श्री प्रकाश चन्द उपाध्याय	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270 (50)	adc3@nsez.gov.in
10.	श्री प्रमोद कुमार	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270 (79)	adc4@nsez.gov.in
11.	श्री राजेन्द्र मोहन कश्यप	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270 (48)	kashyap@nsez.gov.in
12.	श्री अरूण कुमार अग्रवाल	सहायक विकास आयुक्त	0120-2567270 (24)	adc5@nsez.gov.in
13.	श्री विनय मलिक	मूल्य निरूपक, (सीमा शुल्क) नौ.वि.आ.क्षेत्र	0120-2567270 (33)	vinaym.c081603@gov.in
14.	श्री रजनीश कुमार	अधीक्षक (सीमा शुल्क) नौ.वि.आ.क्षेत्र	0120-2567270 (58)	rajnishk.c091201@gov.in
15.	श्री सचिन्दर राणा	मूल्य निरूपक, (सीमा शुल्क) नौ.वि.आ.क्षेत्र	0120-2567270 (29)	sachinderr.g011201@gov.in
16.	श्री सुधीर कुमार	मूल्य निरूपक, (सीमा शुल्क) नौ.वि.आ.क्षेत्र	0120-2567270 (36)	sudhirkumar.g139301@gov.in
17.	श्री बाल किशन	अधीक्षक (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड	-	balkishan.g139301@gov.in
18.	श्री सतीश चन्द्र बदलाकोटी	अधीक्षक (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड	-	satishbudlak.g139301@gov.in

क्र.सं	अधिकारी का नाम	पद नाम	टेलीफोन संख्या	ई–मेल
19.	श्री संजय राणा	अधीक्षक (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड	-	sanjay.rana334@gmail.com
20.	श्री राजीव सक्सैना	अधीक्षक (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड	-	kumarsujit.g139401@gov.in
सीतापुरा (जयपुर), विशेष आर्थिक क्षेत्र				
1.	श्री बुद्धि प्रकाश	उपायुक्त (सीमा शुल्क) सीतापुरा (जयपुर)	0141-2771744	buddhi.prakash@gov.in
2.	श्री पंकज शर्मा	सहायक विकास आयुक्त, सीतापुरा (जयपुर)	0141-2770250	adcjaipur@nsez.gov.in
3.	श्री गौरव कुमार अग्रवाल	अधीक्षक (सीमा शुल्क) सीतापुरा (जयपुर)	0141-2770250	gauravka.c081601@gov.in
4.	श्री महेन्द्र सिंह दिवच	अधीक्षक (सीमा शुल्क) सीतापुरा (जयपुर)	0141-2770250	mahendrasd.c058801@gov.in
5.	श्री राजेश अग्रवाल	अधीक्षक (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर	0141-6683400	rajesha.c058801@gov.in
6.	श्री योगेन्द्र कुमार गुप्ता	अधीक्षक, (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर	0141-6683400	yogendra.g109201@gov.in
7.	श्री राजेश कुमार अरोरा	अधीक्षक, (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर	0141-6683400	rk.arora-rj@gov.in
मुरादाबाद, विशेष आर्थिक क्षेत्र				
1.	श्री विकास	सहायक विकास आयुक्त, मुरादाबाद	0591-2350001	adc@moradabadsez.gov.in
2.	श्री कुशल सिंह रावत	मूल्य निरूपक, (सीमा शुल्क) मुरादाबाद	0591-2350001	kushal@moradabadsez.gov.in
3.	श्री भूषण शर्मा	अधीक्षक (सीमा शुल्क) मुरादाबाद	-	bhushan@moradabadsez.gov.in
गुरूग्राम, विशेष आर्थिक क्षेत्र				
1.	श्री सुरेन्द्र यादव	सहा. आयुक्त (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	surendersy.g169001@gov.in
2.	श्री आनंद कुमार वर्मा	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	anand.78@gov.in
3.	श्री पंकज नेगी	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	pankajn.g089201@gov.in
4.	श्री कृष्ण कान्त बशिष्ट	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	krishnakb.g080901@gov.in
5.	श्री राधे श्याम मिश्र	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	rs.mishra1969@gov.in
6.	श्री राकेश मनोचा	अधीक्षक (सीमा शुल्क) गुरूग्राम	-	rakeshm.g160901@gov.in
मोहाली (पंजाब), विशेष आर्थिक क्षेत्र				
1	श्री करन गोयल	सहायक विकास आयुक्त, मोहाली (पंजाब)	-	karangoyal091@gmail.com
2	श्रीमती पूनम	निर्दिष्ट अधिकारी (सीमा शुल्क) चण्डीगढ		poonamk.1969@gov.in
3	श्री हरसिमरत सिंह बराड़	अधीक्षक (सीमा शुल्क) चण्डीगढ	-	harsimrat.brar@gov.in
4	श्री जितेन्द्र यादव	अधीक्षक (सीमा शुल्क) चण्डीगढ	-	jeetendra.yadav@gov.in

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग
विकास आयुक्त का कार्यालय
नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र
नोएडा दादरी रोड, फेस - II, नोएडा
जिला - गौतमबुद्ध नगर - 201305

आपको हमारा ''प्रेरणा'' का छठा संस्करण अंक कैसा लगा जरूर बताऐं। हम आपके सुझाव और सहयोग का स्वागत करेंगें साथ ही भविष्य में आप अपनी **कहानियाँ, कविताएं चित्र, एसईजेड मे उल्लखनीय घटनाएं, एसईजेड का प्रदर्शन, एसईजेड, ईओयू विदेश व्यापार निति, स्वछता, काम की नैतिकता, योग और फिटनेस, सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता, "DESH विधेयक" अन्य के बारे में अपने लेख भेजते रहें, ऐसी हम आपसे उम्मीद करते हैं।**

सम्पादनः-

श्री बिपिन मेनन
विकास आयुक्त

श्री सुरेन्द्र मलिक
संयुक्त विकास आयुक्त

श्री नितिन गुप्ता
उप विकास आयुक्त

श्री मोहन वीर रूहेला
सहायक विकास आयुक्त